www.thearyasamaj.org

ओ३म्

अंक 136, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास - पौष-माघ, संवत् 2073
जनवरी 2017

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में दिनांक 21, 22, 23 दिसम्बर 2016 को सोल्लास सम्पन्न विश्व शान्ति महायज्ञ की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १२, अंक ७ — ओ३म् — मास/सन् - जनवरी - २०१७

विक्रमी संवत् - २०७३
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११८
दयानन्दाब्द - १९३

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सझसझकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
१.	प्रभातवेला में देवों का आह्वान	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	आखिर कैसे करें रचनात्मक कल के भविष्य को ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	नया साल की वास्तविकता	श्री विनोद बंसल	०८
४.	मकर संक्रान्ति पर्व इसके महत्व को जानकर श्रद्धापूर्वक मनायें।	मनमोहन कुमार आर्य	१०
५.	चार व्रतों को धारण करें।	महात्मा चैतन्यमुनि	१३
६.	ईश्वर से क्या माँगे	नरेन्द्र आहुजा	१५
७.	विकृत हिन्दू धर्म का मुस्लिम धर्म पर प्रभाव	डॉ. रघुवीर वेदालंकार	१७
८.	दुष्टों की संगति से बचें.	कन्हैयालाल आर्य	२०
९.	कविता : कैसा गणतन्त्र ?	कु. समीक्षा आर्या	२३
१०.	चल-चित्रों की सफाई	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	२४
११.	पंजाब केशरी-लाला लाजपतराय	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२६
१२.	वैदिक धर्म के अनन्य वीर : डॉ. धर्मवीर	प्रेमप्रकाश शास्त्री	२९
१३.	होमियोपैथी से वाइरल संक्रमण, खसरा छोटी माता, कर्णमूल रोगों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१५.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

प्रभातवेला में देवों का आह्वान

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

प्रातरग्निं प्रातरिद्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं, प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥ ऋग्. ७.४१.१

ऋषिः **मैत्रावरुणिः वसिष्ठः**। देवता **लिङ्क्ताः**। छन्दः **निचृद् जगती**।

● **(प्रातः)** प्रातःकाल **(अग्निं)** अग्नि को, **(प्रातः)** प्रातःकाल **(इन्द्रं)** इन्द्र को, **(प्रातः)** प्रातःकाल **(मित्रावरुणा)** मित्र और वरुण को, **(प्रातः)** प्रातःकाल **(अश्विना)** अश्विनों को **(हवामहे)** (हम) पुकारें। **(प्रातः)** प्रातःकाल **(भगं)** भग को, **(पूषणं)** पूषा को **(ब्रह्मणस्पतिं)** ब्रह्मणस्पति को, **(प्रातः)** प्रातःकाल **(सोमं)** सोम को **(उत)** और **(रुद्रं)** रुद्र को **(हुवेम)** पुकारें।

आओ, प्रभातवेला में देवों का आह्वान करें। सर्वप्रथम हम अग्नि को पुकारते हैं। अग्नि तेजस्विता का प्रतीक है। हम दिनभर अग्नि-ज्वाल के समान चमकें, अग्नि-ज्वाल के समान ऊर्ध्वगामी रहें। चिनगारी बन हम जगत् में दिव्यता की आग प्रज्वलित करें। हम अग्नि का काम करें, हमारे मुख से निकले शब्द अग्नि का काम करें, हमारे लिखे ग्रन्थ अग्नि का काम करें। फिर हम इन्द्र का आह्वान करते हैं। इन्द्र वीरता का देवता है। हम भी अपना सम्पूर्ण दिन वीरतापूर्वक व्यतीत करें। वैदिक इन्द्र के समान हम आन्तरिक तथा बाह्य वृत्रासुर का वध करें। फिर हम मित्र और वरुण को स्मरण करते हैं। मित्र मित्रता का देवता है। हम भी अपने अन्दर सर्वभूत-मैत्री की भावना को जगाएँ, सबको मित्र-दृष्टि से देखें, सब हमें मित्र-दृष्टि से देखें। वरुण पाप-निवारक देव हैं। वह पाशी है, ज्यों ही हम कोई पाप करते हैं, वह अपने पाशों से हमें बांध लेता है। उसके गुप्तचर सर्वत्र विचर रहे हैं, जो सहस्र नेत्रों से सबको देख रहे हैं। अतः कृत दुष्कर्म के फल-भोग से कोई बच नहीं सकता। एवं वरुण के स्मरण से हम पापों से बचने की प्रेरणा ग्रहण करते हैं। फिर हम अश्विनौ का ध्यान करते हैं। किन्हीं के मत में द्यावा-पृथिवी अश्विनौ है, किन्हीं के मत में सूर्य-चन्द्रमा अश्विनौ है, किन्ही के मत में प्राणपान अश्विनौ है। वेदों में ये देव-भिषग् भी है, जो लंगड़े की टांग लगाते हैं, अन्धों को आँख देते हैं, वंध्या गाय को दुधारु बनाते हैं। हम भी द्यावापृथिवी और सूर्य-चन्द्र के समान बनें। हम भी प्राणपानों के स्वामी बनें। हम भी दीन-दुखियों की सेवा करें।

हम ऐश्वर्य के देव भग का आह्वान करते हैं, हम जीवन-भर ऐश्वर्यशाली रहें। हम पुष्टि के देव पूषा को आह्वान करते हैं, हम भौतिक व आत्मिक पुष्टि को प्राप्त करें। हम ज्ञान के देव ब्रह्मणस्पति का आह्वान करते हैं, हम निरन्तर नवीन-नवीन ज्ञान के उपार्जन में संलग्न रहें। हम शान्ति और रस के देव सोम का आाह्वान करते हैं, अपने मन को तथा जगत् को शान्त, सौम्य रसमय बनायें। हम रौद्रता के देव रुद्र का आह्वान करते हैं। अन्याय, अत्याचार, पाप आदि के प्रति हम रौद्र का रुप धारण करें। इन सब देवों से प्राप्त होने वाले सन्देशों को हम प्रभातबेला में अपने हृदय में अंकुरित करते हैं। इस समय अंकुरित किये गये ये समस्त सन्देश हमारे जीवन में दिन-भर पल्लवित होते रहें। हमारा देवाह्वान सफल हो।

संस्कृतार्थ :- १. ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च, लेट्। छान्दस सम्प्रसारण। २. हुवेम ह्वयेम (निरु. १०.२८)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आखिर कैसे करें रचनात्मक कल के भविष्य को ?

हमारे बच्चे ही हमारी धरोहर हैं, ये ही कल के हमारे भविष्य हैं, इनकी रचनात्मकता ही आगामी का स्वर्णिम इतिहास लिखेगी। आइए, यह विचार करें कि हम प्रकार इस महाशक्ति को सकारात्मक दिशा में गति दे सकते हैं। किसी विचारक ने लिखा है- बच्चे मिसाइल हैं और आप गाइड हैं। मिसाइल का काम लक्ष्य भेदना ये काम वे करेंगे ही गाइड का काम है उन्हें सही दिशा में प्रयास करना, अन्यथा गलत लक्ष्य का भेद हो जायेगा।

बच्चे स्वभाव से ही सृजनशील होते हैं। उनके सामने जो कुछ भी है वह सब कुछ उनके लिये कौतूहल की चीज है। बच्चे सभी चीजों के विषय में जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर लेना चाहते हैं। उनकी जिज्ञासा हीहै जो उन्हें हरदम सचेत रखती है। सफर में जब आप ऊंघते हैं उस समय बच्चा खिड़कियों से बाहर का दृश्य देख रहा होता है। इन दृश्यों को देखते हुए उसके मन में अनेकानेक सवाल उभरते जाते हैं। यदि उसके अभिभावक बाल मनोविज्ञान के जानकार हैं, बच्चे की जिज्ञासा में रुचि लेते हैं तो बच्चा अभिभावक से सवाल करता है। इस तरह जानकारी बढ़ती जाती है और उसके मस्तिष्क का स्वाभाविक विकास होता है। इसके विपरीत ज्यादातर बच्चों को ऐसी माहौल नहीं मिलता, जहां वे अपनी शंकाओं का समाधान कर सकें। ऐसे बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को मन ही मन खाते जाते हैं और फिर आगे चलकर उनके मस्तिष्क में जिज्ञासाएँ जन्म लेना ही बन्द कर देती है। ऐसे बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास सम्भव नहीं है। यही नहीं उनमें अन्वेषण और खोजपरक दृष्टि का अभाव हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा की आधुनिक मांटेसरी और किंडरगार्डन पद्धति का विकास इसी परिप्रेक्ष्य में हुआ है। इन पद्धतियों में बच्चा कक्षा में निष्क्रिय श्रोता नहीं होता। अध्यापक कक्षा का वातावरण कुछ इस तरह बनाता है कि बच्चा अधिक से अधिक सक्रिय रहे। बच्चा अधिक से अधिक सवाल करता है। यह शिक्षक का कौशल होता है कि बच्चे ही बच्चों के सवल का जवाब भी खोजते हैं। शिक्षक की भूमिका गाइड की होती है।

तीन साल तक का बच्चा एकाकी खेलना पसंद करता है। जबकि अधिक आयु वाले बच्चे समूह में खेलना पसंद करते हैं। अभिभावक और शिक्षक को बच्चों की इस तरह की प्रवृत्तियों की जानकारी होनी चाहिए। एकाकी खेलने वाले बच्चों को समूह में नहीं रखना चाहिए। बल्कि उन्हें इस तरह के खिलौने दिये जाएँ, जिससे वे एक ही स्थान पर खिलौनों से खेल सके। इसके विपरीत बड़े बच्चे खेलकूद एवं अन्य काम समूह में करना पसंद करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति को न जानने वाले कई बार बच्चों को एकाकी रहने, खेलने और पढ़ने की सलाह देते हैं। जो कि अनुचित है। कई बार बच्चों के छोटे-मोटे झगड़ों को लेकर अभिभावकों में खूनी संघर्ष तक हो जाता है। जबकि यही बच्चे कुछ ही

देर बाद फिर आपस में मिलजुल कर खेलना कूदना शुरु कर देते हैं। इस तरह बच्चों की प्रवृत्ति को न जानकर लोग बच्चों के लिये व्यर्थ ही परेशानी मोल ले लेते हैं।

वास्तविकता यह है कि आज न तो घर में और न स्कूल में ही ऐसा वातावरण हैं जहां बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हो सके। स्कूलों में किताबी सूचनाएँ ठूंस-ठूंस कर बच्चों के मन मस्तिष्क में भरी जाती है। स्कूलों में खेलकूद एवं अन्य पाठ्यसामग्री क्रियाओं का पूर्ण अभाव देखा जाता है। करके सीखने के सिद्धान्त केवल किताबों में ही सीमित रह गए हैं। विज्ञान-शिक्षा जो पूर्णतया प्रायोगिक ज्ञान पर ही आधारित है, वहां भी सैद्धान्तिक ज्ञान ही अधिक दिया जाता है। विज्ञान के उपकरण और प्रयोगशालाओं का पूर्ण अभाव देखा जा रहा है। जहां ये चीजें हैं भी वहां प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव है। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर पहुँचे इस देश में अभी भी अधिकतर अन्धविश्वास का बोलबाला है। भूतप्रेत अभी भी यहां डेरा जमाए बैठे हैं। जाति-पाति जैसे दकियानूसी और सड़ी गली परम्पराएँ दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से फल फूल रही हैं। बच्चों की जिज्ञासाओं के स्वस्थ समाधान के लिए साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज हिन्दी क्षेत्र में बाल-साहित्य को दोयम दर्जे पर रखा जा रहा है। स्तरीय साहित्यकार बाल साहित्य लिखना अपनी तौहीन समझते हैं। जो कुछ साहित्य लिखा भी जा रहा है वह या तो बच्चों के स्तर से ऊपर का है या अवैज्ञानिक है। कामिक्स बच्चों में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। लेकिन कामिक्स की कथावस्तु में भूत-प्रेत, सुपरमैन, परियाँ, अलौकिक घटनाएँ और चमत्कार ही छाये हुए हैं। कामिक्स में जो कहानियां लिखी होती है उनका व्यवहारिक जीवन में कोई सरोकार नहीं होता। फलतः ऐसे कामिक्स बच्चों के कोमल मस्तिष्क के विकास के बजाय उसमें विकृति ही पैदा करते हैं।

खेलकूद एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बहुत अच्छा और स्वाभाविक ढंग से होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे बच्चों में बहुत कम को ऐसा वातावरण प्राप्त है। स्कूलों में यद्यपि खेल के लिए अलग से शिक्षक जरुर रखे जाते हैं लेकिन खेल को परीक्षा में कोई महत्व नहीं दिया जाता। जिससे बच्चे खेल को उतनी वरीयता नहीं देते जितनी कि पाठ्यक्रम को। छोटे बच्चों के लिए सरकारी स्कूलों में तो छोटे खेल के मैदान होते हैं। लेकिन कुकुरमुत्ते की तरह उग आए नर्सरी स्कूलों में खेल के मैदान या खेलकूद के वातावरण का तो कोई सवाल ही नहीं। अभिभावक या समाज की दृष्टि में जो स्कूल जितना ही अच्छा माना जाता है वहां खेलकूद की उतनी ही उपेक्षा होती है। वास्तव में यह बहुत ही गम्भीर बात है। ये ही कुछ मूलकारण है जिनके कारण ओलम्पिक जैसी विश्व स्तरीय खेल-स्पर्धाओं में हमारा देश शून्य से आगे नहीं बढ़ पाता। रियो ओलम्पिक इसका ज्वलन्त उदाहरण है जिसमें एक सौ उन्नीस खिलाड़ी भाग लिए और पदक मिले सिर्फ तीन ही। बालक ही देश के भावी निर्माता व कर्णधार होते हैं तथा उनके ऊपर ही देश का भविष्य निर्भर होता है, अतएव उसमें विभिन्न प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न कर उनकी सृजन क्षमता का विकास करना परमावश्यक माना गया है। इस सृजन-क्षमता के विकास का दायित्व बालकों के अभिभावकों एवं अध्यापकों पर होता है। अभिभावकों की भूमिका का प्रतिपादन इसलिये किया गया कि बालक चौबीस में १८ घण्टे उन्हीं के सम्पर्क में रहता है। शेष छः घण्टे वह अध्यापकों के सान्निध्य में गुजारता है। इस प्रकार अध्यापक की अपेक्षा तीन गुना अधिक समय वह अभिभावक को देता है। इसीलिये सृजन-प्रतिभा के विकास में अभिभावक का योगदान महत्वपूर्ण माना गया है।

कुछ न कुछ सृजन-क्षमता प्रत्येक बालक के संस्कार में होती है। आवश्यकता केवल उसके विकास की पड़ती है। अपनी रुचि का विषय होने के कारण बालक उस विषय में दिये गये ज्ञान को शीघ्र आत्मसात् कर लेता है क्योंकि उस विषय में उसकी सृजन-क्षमता विकासोन्मुख होती है। कुशल शिक्षक बालक की रुचि एवं उसकी प्रकृति-प्रदत्त प्रतिभा का पूर्ण लाभ उठाते हुये तद्नुकूल उसकी सृजन-क्षमता का विकास करता है। रुचि एवं प्रकृति के प्रतिकूल सृजन के विकास का

यत्न करना ऊसर में बीज बोने के समान ही है। इस यत्न में न तो शिक्षक को सफलता प्राप्त होती है, न ही बालक को।

सृजन के अनेक पक्ष हैं, इनमें से प्रमुख पक्षों का संक्षिप्त विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है -

साहित्यिक-सृजन :- कुछ बालक छात्रावस्था से ही साहित्य में अभिरुचि रखते हैं। उनमें काव्य, कहानी, निबन्ध, नाटक या समीक्षा-लेखन की पूर्ण प्रतिभा होती है। कुछ वाद-विवाद या भाषण देने की कला में पटु होते हैं। ऐसे साहित्य प्रेमी बालकों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार साहित्य के किसी एक क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान देकर उन्हें स्वस्थ-साहित्य-सृजन के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। इस प्रकार देश में अनेक कवि, लेखक, समीक्षक और तर्कशास्त्री उत्पन्न होंगे जो देश की साहित्यिक प्रगति में योगदान करके इसका गौरव बढ़ायेंगे।

कलात्मक-सृजन :- कलायें दो प्रकार की होती है। १. ललित कला, २. उपयोगी कला। ललित कला में साहित्य, संगीत, वादन एवं चित्र कला का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उपयोगी कक्षा में - बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, सुनारगीरी, राजगीरी, चर्मकारी एवं बुनकरी का नाम आता है। दोनों प्रकार की कलायें मानव-जीवन के लिये आवश्यक होती है। ललित कलाओं से आनन्द, यश और धन की प्राप्ति होती है तथा उपयोगी कलाओं से जीविका की। देश की बहुमुखी प्रगति के लिये दोनों प्रकार की कलाओं का सृजन आवश्यक होता है। अतः अध्यापकों को चाहिए कि जिस छात्र की रुचि कला में ही उसे उस विषय का सम्यक् ज्ञान देकर उसकी सृजन क्षमता का विकास करें।

वैज्ञानिक-सृजन :- अनेक बालक विज्ञान के प्रति आरम्भ से ही जिज्ञासु होते हैं। वे प्रकृति के विभिन्न क्रिया-कलापों एवं उसकी शक्तियों का सदुपयोग कर संसार को कोई नया आविष्कार दे जाने की क्षमता रखते हैं। उनमें भी कुछ जीव विज्ञान, कुछ भौतिक विज्ञान और कुछ रसायन विज्ञान में अभिरुचि रखते हैं। प्रयोग द्वारा समस्त पदार्थों, रसायनों और जीवों का सूक्ष्म अध्ययन करना उनके स्वभाव का अंग बन जाता है। ऐसे की वैज्ञानिक प्रतिभा का लाभ उठाकर उन्हें उचित निर्देशन द्वारा वैज्ञानिक-सृजन के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस प्रकार संसार को अच्छे वैज्ञानिकों और अनेक नये आविष्कारों की प्राप्ति होगी जिससे मानव-मात्र के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

तकनीकी-सृजन :- बालकों में जोड़-तोड़ की प्रवृत्ति स्वाभाविक रुप से होती है। यह प्रवृत्ति ही तकनीकी सृजन की जन्मदायिनी है। विभिन्न मशीनों के पुर्जों का उपयोग कर कोई नई मशीन बनाना, या पुर्जों का बनाना, बिजली, पेट्रोल, डीजल आदि का उन कार्यों में उपयोग करना, जिसमें उनका पहिले प्रयोग न किया गया हो। यह सब तकनीकी सृजन के अन्तर्ग आते हैं। कल-पुर्जों, वाहनों और संचार-साधनों की सफाई का मरम्मत करना, ठोस-द्रव और गैस के प्रयोग से कोई उपयोगी उत्पादन करना भी तकनीकी सृजन कहा जायेगा। कुछ बालकों में पढ़ने-लिखने की प्रवृत्ति कम, टेक्नालॉजी की अधिक होती है। उन्हें इसी ओर बढ़ना चाहिये। टेक्नोलॉजी विज्ञान का ही एक अंग है। देश की औद्योगिक प्रगति के लिये इस रुचि के बालकों में तकनीकी-सृजन की क्षमता का विकास करना कुशल शिक्षक का काम है।

औद्योगिक-सृजन :- देश की आर्थिक प्रगति के लिये विभिन्न उद्योग-धंधों का विकास आवश्यक होता है। उद्योग-धंधों का विकास तभी संभव होगा, जब बालकों में औद्योगिक-सृजन में बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के उत्पादन की ही नहीं, छोटे-छोटे कुटीर-उद्योगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ बालकों में नौकरी या खेती की बजाय उद्योग-धंधों की अभिरुचि अधिक पाई जाती है। अध्यापक को चाहिये कि ऐसे बालकों के स्वभाव का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करे कि वह किस उद्योग में अभिरुचि रखता है ? जिसमें उसकी रुचि हो उसी उद्योग के विभिन्न आयामों का ज्ञान देकर उसे औद्योगिक-सृजन में दक्ष करना चाहिये, इसलिए समय की मांग यही है कि कल के हमारे भविष्य को अधिक से अधिक रचनात्मक बनाना ही देश को उन्नत करके खुशहाल बना पायेंगे अन्यथा नहीं। इस प्रकार देश में हर प्रकार के सृजन-कर्ता उत्पन्न होंगे जो अपने-अपने सृजन द्वारा राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकेंगे।

- आचार्य कर्मवीर

प्रत्यावर्त्तन

नया साल की वास्तविकता

- विनोद बंसल

इकतीस दिसम्बर के नजदीक आते ही जगह-जगह जश्न मनाने की तैयारी प्रारम्भ हो जाती हैं। होटल, रेस्तरों, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। हैप्पी न्यू ईयर के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डों के साथ दारू की दुकानें की भी चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाएँ दुर्घटनाओं में बदल जाती है और मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियां गाड़ियों से भिड़ने लगते हैं। रात-रात भर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियां एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृति मर्यादों को तिलांजलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया ?

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीज द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने १७५२ में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। १७५२ से पहले ईस्वी सन् २५ मार्च से शुरु होता था किन्तु १८वीं सदी से इसकी शुरुआत एक जनवरी से होने लगी। ईस्वी कलेण्डर के महीनों के नाम में प्रथम छः माह यानि जनवरी से जून रोमन देवताओं (जोनस, मार्स व मया इत्यादि) के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उनके पौत्र अगस्टम के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोम संवत् के मासों के आधार पर रखे गये। जुलाई और अघस्त क्योंकि सम्राटों के नाम पर थे इसलिए दोनों ही इकतीन दिनों के माने गये अन्यथा कोई भी दो मास ३१ दिनों या लगातार बराबर दिनों की संख्या वाले नहीं है।

ईसा से ७५३ वर्ष पहले रोम नगर की स्थापना के समय रोमन संवत् प्रारम्भ हुआ जिसके मात्र दस माह व ३०४ दिन होते थे। इसके ३३ साल बाद वहां के सम्राट नूमा पाम्पीसियस ने जनवरी और फरवरी दो माह और जोड़कर इसे ३५५ दिनों का बना दिया। ईसा के जन्म से ४६ वर्ष पहले जूलियस सीजर ने इसे ३६५ दिन का बना दिया। सन् १५८२ ई. में पोप ग्रेगरी ने आदेश जारी किया कि इस मास के ०४ अक्टूबर को इस वर्ष का १४ अक्टूबर समझा जाये। आखिर क्या आधार है इस काल गणना क्या ? यह तो यहां व नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होनी चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर १९५२ में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद के द्वारा पंचाज सुधार समिति की स्थापना की गयी। समिति ने १९५५ में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी। किन्तु, तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के आग्रह पर ग्रेगेरियन कलेण्डर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर २२ मार्च १९५७ को इस राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

ग्रेगेरियन कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना ३५८१ वर्ष, रोम की वर्ष यहूदी, मिस्र की, पारसी तथा चीन की वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब ९७ करोड़, ३९ लाख, ४९ हजार वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है।

जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का

सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से हैं। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नही, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नवसंवत् यानि संवत्सरों से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और अनेक सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं। और तो और देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचाग पर आधारित होता है। भारतीय समयानुसार कोई भी काम यदि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जाये तो उसकी सफलता में चार चांद लग जाते हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एख सही दिशा प्रदान करते हैं उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देशप्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नववर्ष प्रारम्भ होता है। आइये इस दिन की महानता के प्रसंगों को देखते हैं-

ऐतिहास महत्व :-

१. आज से एक अरब ९७ करोड़, ३९ लाख ४९ हजार वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारंभ की।
२. प्रभु श्रीराम चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य व धर्म राज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।
३. शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है।
४. प्रभु राम के जन्म दिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन का श्रीराम-महोत्सव मनाने का प्रथम दिन।
५. आर्यसमाज स्थापना दिवस, सिख परम्परा के द्वितीय गुरु अंगददेव जी, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव राम बलीराम हैडगेवार का जन्म दिवस।

प्राकृतिक महत्व -

१. बसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।
२. फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।
३. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये शुभ मुहूर्त होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग उठ सके ? आइये ! विदेशी को फैंक स्वदेशी अपनाएं और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनायें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

पता : ३२९, द्वितीय तल, संत नगर,
ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

हमारा उद्देश्य जागरण

कृपया पक्षपात का चश्मा उतार कर, पत्रिका के विचारों को पढ़िये व कहीं इनमें भूल या भ्रान्ति लगे तो, हमें बताइये अथवा लिख भेजिये।

हम अपनी भूल सुधारने को तैयार हैं किन्तु यदि आपको कुछ सत्य लगे तो, फिर उसका अधिकाधिक प्रचार कर संघटनोद्देश्य पूर्ण करिये॥

पर्व प्रेरणा

'मकर संक्रान्ति पर्व इसके महत्व को जानकर श्रद्धापूर्वक मनायें।'

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मकर संक्रान्ति का पर्व प्रत्येक वर्ष १४ जनवरी को देशभर में मनाया जाता है। आजकर लोग पर्व तो मनाते हैं परन्तु बहुत से बन्धुओं को पर्व का महत्व व उससे जुड़ी हुई घटनाओं का ज्ञान नहीं होता। अतः यहां आवश्यक है कि पर्व के सभी पक्षों को संक्षेप से जान लिया जाये। इस पर्व का पहला महत्व हमारे सौर मण्डल तथा मकर राशि से है। हम जानते हैं कि पृथिवी में दो प्रकार की गतियाँ होती है। एक तो यह अपने अक्ष पर घूमती है। दूसरी गति इसके द्वारा सूर्य की परिक्रमा की जाती हो जो एक वर्ष में पूरी होती है। एक परिक्रमा के काल वा समय को सौर वर्ष कहते हैं। पृथिवी का सूर्य की परिक्रमा का जो पथ होता है वह कुछ लम्बा वर्तुलाकार होता है। मकर संक्रान्ति के दिन से चल कर पुनः उसी स्थान पर आने वा सूर्य का एक पूरा चक्र करने के मार्ग व धरिधि को **"क्रान्तिवृत्त"** कहते हैं। हमारे ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के १२ भाग कल्पित किए हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाश के नक्षत्र पुंजों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गए हैं। यह बारह नाम है, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। **क्रान्तिवृत्त पर कल्पित प्रत्येक भाग व नक्षत्र पुंजों की आकृति राशि कहलाती है। पृथिवी जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश व संक्रमण करती है तो इस संक्रमण को ही संक्रान्ति कहा जाता है।**

लोकाचार में पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। मकर संक्रान्ति का अर्थ हुआ कि सर्य मकर संक्रान्ति के दिन मकर राशि में प्रवेश करता है। ६ महीनों तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता है और ६ मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। इन ६ मासों की अवधि का नाम **अयन** है। सूर्य के उत्तर की ओर से उदय की ६ मास की अवधि का नाम **उत्तरायण** और दक्षिण की ओर से उदय की अवधि को **दक्षिणायन** कहते हैं।

उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखता है और उस दिन का काल बढ़ता जाता है तथा इस अवधि में दिन के बढ़ने से रात्रि का काम कम होने से रात्रि घटती है, इस प्रकर के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। दक्षिणायन में सूर्योदय क्रान्तिवृत्त के दक्षिण की ओरउदय होता हुआ दृष्टिगोचर होता है और उसमें दिन की अवधि घटती है तथा रात्रि की अवधि में वृद्धि होती है।

सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता वा संक्रान्त होता है तो इसको उत्तरायण का आरम्भ होना तथा कर्क राशि में प्रवेश से दक्षिणायन का आरम्भ होना माना जाता है जिन दोनों अयनों की अवधि ६ माह होती है। उत्तरायण में दिन बढ़ने व रात्रि छोटी होने से पृथिवी पर प्रकाश की अधिकता होती है, इस कारण इस उत्तरायण का महत्व, दक्षिणायन से अधिक माना जाता है। उत्तरायण के महत्व का आरम्भ मकर संक्रान्ति से होने के कारण **मकर संक्रान्ति (१४ जनवरी)** के दिवस को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और इस दिन को पर्व के रुप में मनायें जाने की प्रता है।

यह भी जानकारी दे दें कि ज्योतिष के आचार्य बताते हैं कि उत्तरायण का आरम्भ मकर संक्रान्ति के दिन से पहले हो जाता है परन्तु मकर संक्रान्ति पर्व पर ही दोनों पर्व एक साथ मनाये जाने की परम्परा चली आ रही है। भविष्य में इन्हें अलग अलग तिथियों पर मनायें जाने पर विचार भी किया जा सकता है। जो भी हो इस पर्व को मनाये जाने का मुख्य उद्देश्य मकर संक्रान्ति का ज्ञान कराने सहित ६ माह की अवधि वाले उत्तरायण के आरम्भ से है जिससे लोग

हमारे पूर्वजों के ज्योतिष विषयक ज्ञान व रुचि से परिचित हो सकें।

मकर संक्रान्ति पर्व मनाये जाने का दूसरा आधार व कारण इसका शीत ऋतु में आना है। मकर-संक्रान्ति के दिन १४ जनवरी को शीत अपने यौवन पर होती है। इस दिन मनुष्यों के आवास, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक सा रहता है। चराचर जगत् शीत ऋतु का लोहा मानता है। मनुष्य व अन्य आदि प्राणियों के हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं। शरीर ठिठुरन से त्रस्त रहता है। बहुत से वृद्ध शीत क अधिकता से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। हृदय रोगियों के लिए भी शीत ऋतु कष्ट साध्य होती है। इन दिनों सूर्योदय से दिन का आरम्भ होता है परन्तु सूर्य शीघ्र ही अस्त हो जाता है। अर्थात् सूर्योदय और उसके अस्त होने के बीच कम समय होता है जबकि लोग अधिक समय तक सूर्य के प्रकाश व उष्णता की अपेक्षा करते हैं। मकर संक्रान्ति से पूर्व रात्रि की अवधि अधिक हती है जिससे लोगों में क्लेश रहता है परन्तु मकर संक्रान्ति के दिन से रात्रि का समय बढ़ने और दिन का घटने का क्रम बन्द हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मकर संक्रान्ति के मकर ने उस लम्बी यात्रा को निगलना आरम्भ कर दिया है। इस दिन सूर्य देव उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थों पर्यन्त विशेष रुप से वर्णन की गई है।

वैदिक ग्रन्थों में उत्तरायण को देवयान कहा जाता है और ज्ञानी लोग अपने शरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण वा देवयान में रखते हैं। उनका मानना होता है कि उत्तरायण में देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए देह त्याग व प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। मकर संक्रान्ति के ऐसे प्रशस्त महत्व वा समय को पर्व बनने से वंचित नहीं रखा जा सकता। आर्य पर्व पद्धति के लेखक पं. भवानीप्रसाद जी ने लिखा है कि आर्य जाति के प्राचीन नेताों ने मकर-संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) को पर्व निर्धारित कर दिया।

मकर संक्रान्ति का पर्व चिरकाल से मनाया जाता है। यह पर्व प्रायः भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सर्वत्र इस पर्व पर शीत के प्रभाव को दूर करने के उपाय किये जाते दिखाई देते हैं। वैदिक शास्त्र ने शीत के प्रतीकार के लिए तिल, तेल, तूल (रुई) का प्रयोग बताया है। तिल इन तीनों में मुख्य है। पुराणों में तिल के महत्व के कारण कुछ अतिश्योक्ति कर इसे पापनाशक तक कह दिया गया। किसी पुराण का प्रसिद्ध श्लोक है **तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमो तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पापनाशनाः॥** अर्थात् तिल-मिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं।

मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं और इष्ट मित्रों में बांटे जाते हैं। तिल को कूट कर उसमें खांड मिलाकर भी खाते हैं। यह एक प्रकास से मिष्ठान की भांति रुचिकर होता है। महाराष्ट्र में इस दिन तिलों का तिलगूल नामक हलवा बांटने की प्रथा है और सौभाग्यवती स्त्रियां तथा कन्याएँ अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर उनको हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती है।

यह पर्व प्राचीन भारत की संस्कृति का दिग्दर्शन कराता है जिसका प्रचलन स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर भी किया गया है। आज के समय में जो मिष्ठान हैं वह प्रायः स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे हैं। यह भी कहा जाता है कि प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू-वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पकवान् बांटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट मित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

अतः मकर संक्रान्ति का पर्व अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इसे मनाते समय इससे जुड़ी उपर्युक्त सभी बातों का ध्यान में रखना चाहिये। ऐसा कर हम स्वयं भी

www.thearyasamaj.org

इनसे परिचित रहेंगे और हमारी भावी पीढ़ियाँ भी इन्हें जानकर उसे अपनी आगामी पीढ़ियों को जना सकेंगी। इस दिन यज्ञ करने का भी विधान किया गया है। यज्ञ करने से वातावरण दुर्गन्धमुक्त होकर सर्वत्र सुगन्ध का प्रसार करने वाला होता है। यज्ञ स्वास्थ्य के लिए तो यह लाभप्रद होता ही है इसके साथ ही इससे ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना भी सम्पन्न होती है। यज्ञ के गोधृत व अन्न-वनस्पतियों की आहुतियाँ का सूक्ष्म भाग वायुमण्डल को हमारे व दूसरे सभी के लिए सुख प्रदान करने में सहायक होता है।

आर्य पर्व पद्धति में यज्ञ करते हुए हेमन्त और शिशिर ऋतुओं की वर्णनपरक ऋचाओं से विशेष आहुतियों का विधान किया गया है जिससे यज्ञकर्ता व गृहस्थी उनसे परिचित हो सकें। भारत की प्राचीन वैदिक धर्म व संस्कृति विश्व के सभी मनुष्यों के पूर्वजों की धर्म व संस्कृति रही है। इसका संरक्षण और प्रसार सभी मनुष्यों का पावन कर्त्तव्य है। हमें प्रत्येक कार्य करते हुए यह भी ध्यान रखना चाहिये कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करना है। हम ऐसा कोई कार्य न करें जिससे इन उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा हो और ऐसा कोई काम करना न छोड़े जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं। मकर संक्रान्ति पर्व की शुभकामनाओं सहित।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

"क्या बुरी दुर्जनता है"

यही जीवन है, तो क्या जीवन है
यही सज्जनता है, तो बुरी क्या दुर्जनता है ?
देखो सहो और चुप रहो
आदमी हो मगर, काठ के बने रहो
कोई लुटे कोई मिटे, तुम बन्द करके दरवाजा
बस पड़े रहो, और कहो कि हम तो
सज्जन ठहरे, तो क्या बुरी दुर्जनता है ?
तुम जैसे लोगों के कारण
हर ओर दुर्जन करते निवास हैं
भागते फिरते, बचाते इज्जत
सज्जनों की हर ओर
बिखरी पड़ी लाश है
रक्षक, भक्षक एक से
शासक, शोषक एक से
तुम्हारी स्वार्थ, डर भरी चुप्पी
से आ रही बास है
यही सज्जनता है
तो क्या बुरी दुर्जनता है ?

- ले. देवेन्द्र कुमार मिश्रा, पाटनी कालोनी,
भरत नगर, चन्दनगाँव, छिंदवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

"चार मुक्तक"

- महात्मा चैतन्यमुनि

तुम न सुनो तो क्या करूँ मैं गाता तो हूँ,
देव जनों की विरासते सुनाता तो हूँ।
दीप हूँ जलना काम है मेरा, चलना नहीं-
बटोहियों को लक्ष्य तक पहुंचाता तो हूँ॥

विघटन के समक्ष संगठन समर्पित लगते हैं,
सौहार्द के आगे द्वेष गर्वित लगते हैं।
आओ चलें अब तो खुली हवा में मांस लें-
घरों से फुटपाथ सुरक्षित लगते हैं॥

अन्धकार को देखने वाले दिल के काले हैं,
कुटिलतायुक्त, सूरज को कोसने वाले हैं।
हमने जलाया है चिरागों की तरह खुद को-
जिधर से भी निकले उजाले ही उजाले हैं॥

बहुत ही उथले ये समन्दर निकले,
लाख पर्दों वाले भी दिगम्बर निकले।
हम छानते रहे खाक सहराओं की -
रकीब ही मुकद्दर के सिकन्दर निकले॥

00-00

www.thearyasamaj.org

उपादेयात्मक

चार व्रतों को धारण करें

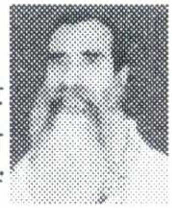

- महात्मा चैतन्यमुनि

हमारे पूर्व पुण्य कर्मों के आधार पर हमें मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है। इसी के साथ कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों, मन, बुद्धि और चित्त के रुप में अद्‌भुत वाह्यकरण व अन्तःकरण भी प्राप्त हुए हैं। यदि हम इन कारणों का सावधानी पूर्वक प्रयोग करेंगे तो जीवन में सुख शान्ति और आनन्द का सृजन कर सकते हैं। इसके विपरीत यदि इनका सदुपयोग नहीं कर पाए तो जीवन में दुःख, कष्ट और क्लेश ही प्राप्त होंगे। जीवन की सार्थकता इसी में है कि हम इनका सदुपयोग करते हुए अपने जीवन को निरन्तर उज्जवलता की ओर ले जाएँ। इसके लिए हमें जीवन में व्रती बनना चाहिए और फिर उन व्रतों का भली प्रकार से पूरे मनोयोग से कार्यान्वियन भी करना चाहिए तभी जीवन सफल होगा। वेद में बहुत ही सुन्दर कहा गया है -

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये । वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥

(यजु. ३६-१)

मैं **(वाचम्)** वाणी का आश्रय करके **(ऋचम्)** ऋचाओं की, ऋग्वेद की **(प्रपद्ये)** शरण में जाता हूँ। इससे **(वाग् ओजः)** वाणी का बल प्राप्त होता है। **(मनः)** मन का आश्रय करके **(यजुः)** यजुर्वेद की शरण में **(प्रपद्ये)** जाता हूँ जिससे **(सह ओजः)** एकता का बल बढ़ता है। **(प्राणम्)** मैं अपने प्राण, जीवन का आश्रय लेकर **(साम)** सामवेद, उपासना वेद की **(प्रपद्ये)** शरण में जाता हूं। इससे मुझमें **(मयि प्राणः)** प्राण-शक्ति का संचार हो जाता है। **(श्रोत्रम्)** कान का आश्रय करके **(चक्षुः)** ज्ञान अथवा ब्रह्मदेव **(अथर्ववेद)** की शरण में जाता हूँ। इससे **(मयि अपानः)** मुझ में अपान अर्थात् दोषों को दूर करने की शक्ति प्राप्त होगी।

इस मन्त्र में व्यक्ति को जिन चार व्रतों को धारण करने की प्रेरणा दी गई है वे व्रत अत्यधिक महत्वपूर्ण है। साथ ही उस-उस व्रत का कार्यान्वयन करने से हमें क्या-क्या उपलब्धि होगी इस बात को भी स्पष्ट कर दिया गया है। पहला व्रत वाणी का कहा गया है। वाणी का आश्रय लेकर मैं ऋचाओं की शरण में जाता हूँ। मैं अपनी वाणी को ऋग्वेद के मन्त्रों से मण्डित करता हूँ। यह मेरा प्रथम व्रत है ... व्यक्ति के अंगों में वाणी सबसे अच्छा अंग भी है और सबसे बुरा भी यही अंग है। यदि हम वाणी का सदुपयोग करें तो यह सबसे अच्छा अंग है और यदि इसका दुरुपयोग करें तो यही सबसे बुरा अंग भी है। यदि हम अपनी वाणी का भली प्रकार से सोच-समझकर प्रयोग करें तो अपने शत्रु को भी मित्र बना सकते हैं और यदि असावधानी से भी वाणी का दुरुपयोग हो जाए तो अपना मित्र भी पल भर में शत्रु बन जाता है। ऋग्वेद ज्ञान-काण्ड है। यदि हम अपनी वाणी का प्रयोग ज्ञानवर्धक करेंगे तो निश्चित रुप से उस वाणी का हमें अच्छा ही फल प्राप्त होगा इसलिए व्यक्ति को वेदादि सत्य शास्त्रों का अध्ययन करके यह ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि कहां किस प्रकार की बात करनी चाहिए और किस प्रकार की नहीं। इसीलिए कहा गया है कि **(वाग् ओजः)** इससे वाणी का बल प्राप्त होता है अर्थात् ऐसा व्यक्ति अपनी वाणी का सही-सही ढंग से प्रयोग करते हुए जीवन में सफलता को प्राप्त होता है।

दूसरा व्रत कहा गया कि मन का आश्रय करके मैं यजुर्वेद की शरण में जाता हूँ। यजुर्वेद कर्मकाण्ड का ग्रन्थ है और कर्मकाण्ड का आधार यज्ञ है। मैं अपने मन को यज्ञों के प्रति अर्पित करता हूँ... मन को वश में करने का सबसे अच्छा उपाय यही बताया गया है कि हम अपने मन को शिवसंकल्पी बनाएँ... यज्ञमयी भावना से स्वयं को ओत-प्रोत करना ही मन को शिवसंकल्पी बनाना है। यज्ञ का भाव ही है कि स्वयं के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीना। केवल अपना नहीं बल्कि सभी के प्रति कल्याण-भावना रखनी... इसी भावना से यज्ञ को ब्रह्माण्ड की नाभि कहा

गया है। समूचे संसार का कार्य-कलाप त्यागवृत्ति के आधार पर ही चला हुआ है। जिस दिन यह त्याग की वृत्ति समाप्त हो जाएगी उसी दिन संसार-रुपी यज्ञ में व्यवधान पैदा हो जाएगा। वहीं पर कटुता व वैर-विरोध पैदा हो जाता है। यज्ञमयी जीवन जब होगा तो फिर सिसे ही (सह ओजः) एकता का बल बढ़ता है। यज्ञ का एक भाव संगतिकरण भी है अर्थात् जब यज्ञमयी भावना परवान चढ़ेगी तो आपसी प्रेम और सौहार्द भी बढ़ेगा... आगे कहा कि मैं अपने प्राण, जीवन का आश्रय करके सामवेद अर्थात् उपासना की शरण में जाता हूँ। सामवेद उपासना काण्ड है और परमात्मा की उपासना करने से **(मयि प्राणः)** ही प्राण का बल बढ़ता है... इसी से व्यक्ति की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होती है ... प्रभु उपासन से व्यक्ति न केवल आत्म-विश्वास से परिपूर्ण होता है बल्कि वह निर्भय भी हो जाता है। पहाड़ जितने दुःख को भी सहजता से सहने का सामर्थ्य उसे प्राप्त हो जाता है।

चौथा व्रत कहा गया कि कान का आश्रय करके मैं चक्षुः अर्थात् ज्ञान अथवा ब्रम्हदेव (अथर्ववेद) की शरण में जाता हूँ। अथर्ववेद हमारे दृष्टिकोण को ठीक करता है इसलिए उसका नाम ही चक्षुः हो गया है... जब व्यक्ति विवेकरुपी चक्षु से देकता है तो उसे संसार जैसा है वैसा ही दिखाई देता है, इसीलिए **(मयि अपानः)** उसमें अपान अर्थात् दोषों को दूर करने की शक्ति व सामर्थ्य प्राप्त होती है... महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 'उपदेश मंजरी' में लिखते हैं... फिर यह भी है कि उपासना के द्वारा आत्मा में सुख का प्रादुर्भाव होता है। इस उपाय को छोड़ पापनाशन करने के लिए अन्य उपाय नहीं है। काशी जाने से हमारे पाप दूर होंगे यह समझ, अथवा तोबा करने से पाप छूटना, किवां हमारे पाप का भार अमुक भद्र पुरुष लेकर शूली चढ़ गया इत्यादि अन्य लोगों की सारी समझ अप्रशस्त है अर्थात् भूल है। उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेक होने से क्षणिक (नाशवान्) वस्तुओं से शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते... 'सत्यार्थ प्रकाश (सप्तम समुल्लास) में वे इसी बात को इस ढंग से कहते हैं - जब इन साधनों को करता है, तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्यप्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुंच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ीभर भी इस प्रकार ध्यान करता है, वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है... सर्वज्ञादि गुणों के साथ परमेश्वर की उपासना करनी **सगुण** और (राग) द्वेष रुप गन्ध स्पर्शादि गुणों से पृथक् मान अतिसूक्ष्म आत्मा के भीतर-बाहर व्यापक परमेश्वर में दृढ़ स्थित हो जाना **'निर्गुणोपासना'** कहाती है। जैसे शीत से आतुर दोष-दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। उपासना की उपलब्धि के बारे में वे अन्यत्र (आर्याभिविनय) लिखते है- सब भूत, आकाश और प्रकृति से लेके पृथिवी पर्यन्त संसार में जो परमेश्वर व्याप्त होके पूर्ण भर रहा है, जिसके बिना एक कण भी खाली नहीं, जीव को चाहिए कि अपने आत्मा से अत्यन्त सत्याचरण, विद्या, श्रद्धा, भक्ति से, उस यथार्थ सत्यस्वरुप परमात्मा को यथावत् जानके, उसके निकट उपस्थित-प्राप्त-अभिमुख होके उस परमानन्द स्वरुप परमात्मा में प्रवेश करके सब दुःखों से छूट (द्वि.प्र.) उसमें स्वतन्त्रता से विचरता हुआ महाकल्प पर्यन्त सुख ही सुख भोगे। (सत्यार्थ-प्रकाश-नवम समुल्लास)... इसलिए सब मनुष्यों को चाहिए कि योगाभ्यास आदि से सदा ईश्वर की उपासना करें। इस अनादि काल से प्रवृत्त धर्म से मुक्तिसुख को पाके, पहिले मुक्त हुए विद्वानों... के समान आनन्द भोगे (यजु. ३१-१६)।

पता - महादेव, सुन्दरनगर, जिला मंडी, हि.प्र. १७५०१९

विचारात्मक ईश्वर से क्या माँगे

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

मेरे घर से बाजार के रास्ते में एक मंदिर पड़ता है। मंदिर का पुजारी भी कुछ विचित्र किस्म का लगता है पर मुझ से खुलकर बात करके हंस लेता है। एक दिन बाजार जाते हुए मैं मंदिर के बाहर रुक गया। अभी आरती का समय नहीं हुआ था सो पंडित जी बाहर खड़े थे। तभी दो लड़कियाँ स्कूटी पर वहां से निकली और हाथ हिलाकर जोर से 'हाय हेलो' कहकर चली गई। मैं चौंका तो पंडित जी हंस पड़े बोले "महाशय जी इनके पास समय कहां है यह पूरी शाम बाजार में दोस्तों के साथ फलर्ट करके चाउमिन पिज्जा खायेंगी, अब यही फलर्ट भगवान के साथ भी करने लगी हैं।" पंडित जी की बात सुनकर मेरी रुचि और बढ़ गई। मैंने पूछा "पर पंडित जी यह ऐसा करके आपके इस भगवान से मांगते क्या हैं ?" पंडित जी बोले "मत पूछिये जनाब इनकी कैसी अनोखी मांग होती है ! कोचिंग के बहाने दोस्तों के साथ मटरगस्ती और पेपरों के दिनों में हे भगवान पास करवा देना व्रत रखूंगी। लड़के आयेंगे हे भगवान फलां लड़की पट जाये मैं प्रसाद चढ़ाऊंगा। नौकरी लग जाए तो दान दूंगा। एक भक्त आया और बोला पंडित जी प्रार्थना कर दो लाटरी लग जाए तो सवा मनी कर दूंगा। अगर फ्लैट मिल गया तो माता के घर जाकर आऊंगा। एक तो पड़ोसी के नुकसान की मन्नत मांग कर गया। बस महाशय जी आजकल तो लोग भगवान से यही कुछ मांगते हैं।" पंडित जी की बात सुनकर मैं बरबस जोर से हंस पड़ा "पंडित जी लोग यहां ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करते हैं या व्यापार?" पंडित मेरा आशय समझकर कुछ संजीदा हो गया "महाशय जी यह तो मुझे नहीं पता लेकिन इनके चढ़ावे से मेरा गुजारा अच्छा चल जाता है।" मैंने हंसते हुए कहा- "ठीक है पंडित जी भगवान के नाम पर आपका व्यापार अच्छा चल जाता है।" इतना कहकर मैं बाजार की तरफ दिया गया और सोचने लगा कैसा अंधविश्वास है आजकल लोग भगवान से उपासना प्रार्थना के नाम पर सीधे सीधे व्यापार करने लगे हैं।

यही सोचते चिंतन करते बाजार पहुंचा तो एक और कौतुक दिखाई दिया। किराने की दुकान पर एक आदमी कपड़ा देने की जिद कर रहा था और दुकानदार उसपर झल्ला रहा था। मैंने अपना सामान लेने से पहले दुकानदार से माजरा पूछा तो बोला - "महाशय जी, यह पागल है मेरी दुकान से कपड़ा मांगेगा, कपड़े की दुकान पर दाल-चावल पूछेगा।" दुकानदार की बात सुनकर मैं चिंतन में पड़ गया, अपना सामान लिया और सोचते हुए वापिस चल दिया।

मैं सोच रहा था क्या हम सबकी यही स्थिति तो नहीं है। पहले तो हम ईश्वर का सच्चा स्वरुप नहीं समझते और भगवान के ठेकेदार बनकर बैठे गुरुओं, डेरे, मंदिरों के पुजारियों, पीरों के पास अपनी ऐसी लंबी चौड़ी मांग सूची लेकर पहुंच जाते हैं और फिर वहां ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए व्यापार करते हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि हम ईश्वर से क्या मांगे? हमें ईश्वर क्या दे सकता है ? लोग अक्सर कहते हैं ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है वह प्रसन्न हो जाए तो कुछ भी और सब कुछ दे सकता है। जैसे ईश्वर ना हुआ सवामनी के वादे में हमने अपने काम के लिए ठेकेदार चुन लिया। क्या ईश्वर को अपने कार्यों अर्थात् सृष्टि के निर्माण, पालन, न्याय और संहार में किसी अन्य की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिए वह सर्वशक्तिमान कहलाते हैं। अब यदि ऐसे ईश्वर से

हम अपने लिए भौतिक सुख सुविधायें, नौकरी, धन, लाभ या शत्रु का विनाश मांगते हैं और स्वयं उसके लिए कोई पुरुषार्थ ना करके ईश्वर के किसी ठेकेदार से दान, दक्षिणा आदि का सौदा करने का प्रयास करते हैं तो हमारी स्थिति भी उसी अबोध पागल सरीखी हैं जो कि किराने की दुकान पर कपड़ा मांग रहा था।

हम ईश्वर से क्या प्रार्थना करें इसके लिए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में स्पष्ट करके लिखते हैं- **यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मा मद्य मेधयाग्ने मेधविनं कुरुः स्वाहा।** यजु. ३२/१४ अर्थात् हे प्रकाश स्वरुप परमेश्वर आपकी कृपा से जिस बुद्धि की उपासना विद्वान, ज्ञानी और योगी लोग करते हैं उसी बुद्धि से युक्त हम को इसी वर्तमान समय में आप बुद्धिमान कीजिए।

महामन्त्र गायत्री के द्वारा भी हम **धियो यो नः प्रचोदयात्** कहते हुए ईश्वर से मेधा बुद्धि की कामना करते हैं। शिव संकल्प मंत्रों में भी हम शुभ संकल्पों वाली मेधा बुद्धि की कामना करते हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि ईश्वर से उपासक को उपासना करते हुए उज्ज्वल भावों, शुभ संकल्पों, मेधा बुद्धि, परोपकार के कार्यों के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए उन सर्वहितकारी कार्यों की सफलता में सहायता, शक्ति, पराक्रम, बुद्धि देने की कामना करनी चाहिए।

पता : ६०२, जीएच-५३, सेक्टर-२०, पंचकूला

तथ्यात्मक अंग्रेज ने भारत का इतिहास कैसे बिगाड़ा

१९४७ ई. से पूर्व की बात है। श्री पं. भगवद्दत जी एक बार शिमला गये। वहां उनसे अंग्रेस सरकार का एक एजेन्ट मिला और कहा कि आप एक पुस्तक लिखें जिसमें यह सिद्ध करें कि हरियाणा व पंजाब के जाट विदेशी आक्रमणकारियों की सन्तान है। आपको इस कार्य के लिए बहुत बड़ी राशि दी जाएगी। श्री पं. जी ने कहा कि आपने एक ठीक व्यक्ति को इस कार्य के लिए में नहीं चुना मैं तो हरियाणा के जाटों, अहीरों व गूजरों को प्राचीन आर्यों की ही सन्तान मानता हूँ। मैं आपका यह कार्य करने में असमर्थ हूँ। यही कार्य करवाना है तो मेरे पास क्यों आए ? उस सरकारी दूत ने कहा, कई इतिहासकारों ने लिखा है कि अहीर जाट आदि विदेशी आक्रमणकारियों की सन्तान है। हम चाहते हैं कि आप अपने ग्रंथ में ऐसा लिखें। पं. भगवद्दत जी ने उस व्यक्ति को धिक्कारा फटकारा और धन के प्रलोभन में न आकर पुनः यही कहा कि मैं वीर जाटों, अहीरों व गुजरों को आर्यों की ही सन्तान मानता हूँ। इस घटना से स्पष्ट है कि विदेशी ईसाई सरकार भारत का इतिहास बिगाड़ने के लिए कहां तक जाने को तैयार थी। महर्षि दयानन्द का एक शिष्य तो सरकार के फन्दे में न फंसा, न जाने और कितने इतिहास लेखकों ने पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेचा। इस घटना से यह भी पता चलता है कि यह विदेशी ईसाई सरकार आर्य जाति की भुजा हमारे क्षत्रिय वर्ग को अनार्य सिद्ध करने पर तुली हुई थी। स्मरण रहे कि मैक्स मूलर आदि पश्चिमी विद्वान् अंग्रेज सरकार के वेतनभोगी नौकर थे। उनका आत्मा स्वतन्त्र नहीं था, अतः उन्होने जो कुछ भी लिखा सूली व साम्राज्य की वृद्धि की रक्षा के लिए लिखा।

लेखक- राजेन्द्र जिज्ञासु

www.thearyasamaj.org

विश्लेषणात्मक विकृत हिन्दू धर्म का मुस्लिम धर्म पर प्रभाव

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार,
रामजस कालेज, दि.वि.वि.

यद्यपि हिन्दू धर्म नामक कोई धर्म नहीं है, तथापि व्यवहार में इसका प्रयोग होता है। इसे सनातन धर्म भी कहा जाता है। यह नाम तो बिल्कुल हीअनुपयुक्त है क्योंकि सनातन का अर्थ है - सदा से चलने वाला। यह विशेषण है, विशेष्य नहीं। सनातन तो वैदिक धर्म ही है। वस्तुतः मुस्लिम, ईसाई आदि सभी सम्प्रदाय ही हैं, तथापि व्यवहार में इन्हें धर्म कहा जाता है। यहां भी यही प्रयोग किया जायेगा। मध्यकाल में वैदिक धर्म अपने विशुद्ध रूप में नहीं रह गया था। उसमें विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी थी तथा उन्हें ही धर्म मान लिया गया था। महर्षि दयानन्द ने उन सभी विकृतियों पर प्रहार करके शुद्ध वैदिक धर्म का स्वरूप हमारे सामने रखा। **इसी विकृत हिन्दू धर्म का प्रभाव मुस्लिम धर्म पर है। मुहम्मद साहब पर्याप्त समय तक भारत में रहे तथा उन्होंने यहां के धर्म का अध्ययन किया था। मुस्लिम मत में जो अच्छाई है, यह वेदों के आधार पर है तथा जो बुराई या विकृतियाँ है, उन्हें तात्कालिक हिन्दू धर्म के प्रभाव से मुहम्मद साहब ने ग्रहण किया।** यथा वेद एकेश्वरवाद का प्रतिपादक है तथा वेदों मे कहीं भी मूर्त्ति पूजा का विधान नहीं। मुस्लिम धर्म भी इन दोनों बातों को मानता है। सम्भवतः यही एक अच्छाई है जिसे वेदों से ग्रहण किया गया है। विकृतियाँ इस प्रकार है :-

१. हिन्दू धर्म तथा उनके आधारभूत पुराणों आदि में स्वर्ग-नरक लोकों की कल्पना की गयी है। स्वर्ग में देवता कहते हैं जो अजर-अमर है। वहां कल्पवृक्ष इच्छानुसार फल देता है। सभी सुख स्वर्ग में है। इसके विपरीत नरक में यमराज पापियों को अग्नि में जलाते हैं तथा अन्य तरह-तरह के दण्ड देते हैं। मुस्लिम मत में भी बहिस्त की यही कल्पना है कि वहां शराब की नदियाँ बहती है, सुन्दर-सुन्दर स्त्रियाँ (हूर) भी हैं, तथा अन्य सभी सुख है। स्वर्ग में भी अप्सराएँ होती है। मुसलमानों में दोजख में भी पापी जन तपाए जाते हैं, उन्हें यातनाएं दी जाती हैं।

२. हिन्दू धर्म में शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की - आज भी हिन्दू लोग इन चारों धामों की यात्रा करके पुण्य मानते हैं। मुसलमानों में यही प्रथा हज के रूप में हैं। मक्का-मदीना की यात्रा करके हाजी बन मुसलमान भी अपने आप को पुण्यशाली समझता है। कहावत तो यह भी है -

हाजी जी हज कर आए लुफ्ते मजीद से।
पाप लिपटा रह गया काबा शरीफ से॥

अर्थात् हज यात्रा के बाद हाजी को कोई पाप नहीं लगता। यही मान्यता तो हिन्दू धर्म में है। यह कहना भी यहाँ प्रासङ्गिक ही होगा कि हज यात्रियों को करोड़ों रूपये की सहायता सरकार से मिलती है, जो हमसे टैक्स द्वारा वसूली जाती है, जबकि हिन्दुओं के चारोधामों की यात्रा में एक पैसा भी सरकार खर्च नहीं करती। यह सरकार का धर्मनिरपेक्ष चेहरा है। यहां हिन्दू धर्म है ही इतना सहिष्णु कि इसे कितना भी दबालो, यह चूं तक नहीं करता, तभी तो अपनी मौत मर रहा है। इसकी यह सहिष्णुता इसे समाप्त करके रख देगी। इसी सहिष्णुता ने विदेशी आक्रान्ताओं को इस देश में बसाया, देश का बंटवारा कराया तथा अब स्वयं हिन्दू भी इसके द्वारा अपमानित होने लगा है।

३. उग्रवाद - मुस्लिम धर्म सहिष्णु नहीं है, वह अत्यन्त उग्र है। गैर मुस्लिम को कत्ल करना उसका ध्येय है जबकि हिन्दू का ध्येय मरना है, मारना नहीं। मुसलमानों ने यह उग्रता वेद से सीखी है। अथर्ववेद में उग्रम् को भी पृथिवी के धारक तत्त्वों में गिना गया है। उग्रता के बिना धर्म भी नहीं बस सकता। वेद भी राक्षसों को मारने की आज्ञा देता है। मुसलमानों ने इसी उग्रता को धारण किया हुआ है, केवल इतना परिवर्तन कुरान में कर दिया गया, कि गैर मुस्लिमों को मारो, काटो, जबकि वेद ऐसा नहीं कहता। उग्रता का

ही परिणाम है कि आज मुसलमानों के १०-११ स्वतंत्र राष्ट्र विश्व में है। इस्लाम के नाम पर ये सब एक हैं। अपने धर्म में वे सरकार का भी दखल पसंद नहीं करते। सरकार भी शरीयत के आगे झुकती है, जबकि हिन्दू धर्म तथा उसके शंकराचार्य तक को अपमानित करने में सरकार कसर नहीं छोड़ती। यह हमारी सहिष्णुता तथा उनके उग्रवाद का ही फल है।

४. **हिन्दू धर्म** में अवतारों की कल्पना है। मुसलमानों में भी मुहम्मद साहब आदि खुदा के पैगम्बर (दूत) ही थे।

५. **हिन्दू पता** नहीं कितने व्रत रखते हैं। वर्ष में दो बार नवरात्र तो सुप्रसिद्ध है। मुसलमानों में रोजा इसकी ही नकल है। यद्यपि ये दोनों प्रथा अच्छी ही है, तथापि दोनों में साम्य तो है ही।

६. **हिन्दू शास्त्रों में** तीन बार सन्ध्या का विधान है, भले ही आज का हिन्दू एक बार भी सन्ध्या न करके मूर्ति के सामने सिर झुकाकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेता है। मुसलमानों में एक पग आगे बढ़कर पांच बार नमाज पढ़ने की प्रथा है। शुक्रवार को तो सड़कों पर लम्बी-लम्बी कतारें सर्वत्र देखी जा सकती है, जो न केवल आवागमन को ही रोकती है, अपितु वहां संगठन का पाठ भी नमाजियों को पढ़ाया जाता है। काश, हिन्दू मुसलमानों से इस अच्छाई को सीख पाते।

७. **मुसलमानों में** बहुपत्नी प्रथा है। स्वयं मुहम्मद साहब भी कई बीवियों के पति थे। हिन्दुओं में भी महाभारत काल से ही बहुपत्नी प्रथा मान्य रही है। कृष्ण को तो भगवान का अवतार मानकर भी उनके पुजारी कुब्जा, राधा तथा अन्य न जाने कितनी गोपियों से उनका विषयभोग सिद्ध करते हैं। मुहम्मद साहब ने यहीं से यह सीखा है। जन साधारण में भी हिन्दूओं में अनेक पत्नियां होती थी, जैसा कि मुसलमानों में अब भी है।

८. **मुसलमान मांस** खाते हैं। गो मांस उन्हें विशेष प्रिय हैं, किन्तु हमारे मध्यकालीन धर्माचार्यों ने भी तो इसका प्रतिपादन किया है। श्रौत सूत्रों, ग्रह्य सूत्रों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में मांस का पर्याप्त वर्णन है। यहां तक कि गोमांस का भी। महीधर तथा सनातनियों के प्रमाणभूत आचार्य सायण ने तो वेदभाष्य में भी गोवध का विधान किया है। यह तो अद्वितीय वेद वेत्ता महर्षि दयानन्द का ही साहस था कि उसने इन सभी भाष्यों तथा अनार्ष ग्रन्थों को अप्रामाणिक मानकर घोषणा की कि वेदों में गो मांस तो क्या, किसी भी प्रकार के मांस भक्षण का विधान नहीं है। गाय को तो वहां सर्वथा अवध्य कहा है। मतान्ध लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए शास्त्रों में मांस भक्षण को मिला दिया तथा वेद को भी कलंकित कर दिया। मैथिल ब्राह्मण अभी भी आतिथ्य के रूप में मछली प्रस्तुत करते हैं। इसलिए मांस भक्षण के विषय में हिन्दू आर्य तथा मुस्लिम धर्म एक ही है।

९. **बलिप्रथा** - हिन्दू लोग दुर्गा, काली आदि के नाम कितने निरीह पशुओं की बलि देते हैं, यह कलकत्ता आदि स्थानों में भली भांति देखा जा सकता है। वहां मारे गये जानवरों का खून नालियों में बहता है। यह सब धर्म के नाम पर होता है। मुसलमानों ने भी इसे अपनाया। वहां भी ईद के अवसर पर बकरों, भेड़ों तथा गाय आदि की कुर्बानी करके ही अपने खुदा को प्रसन्न किया जाता है। मुहम्मद साहब ने यह कार्य हिन्दुओं से ही सीखा है। महर्षि दयानन्द इसका प्रतिवाद करते हुए कहते हैं कि वेदों में कहीं भी परमेश्वर के लिए जीवों की कुर्बानी का आदेश नहीं है। वह सबका दयालु पिता है। ऐसे क्रूर कार्य को वह कैसे पसंद करेगा। महर्षि की इस बात को हिन्दुओं ने ही कितना सुना है ?

१०. **हिन्दुओं में जन** साधारण में भी यह बात प्रचलित है कि संसार के पालक विष्णु जी क्षीरसागर में रहते हैं। वहां उनकी शय्या शेष नाग है। मुहम्मद साहब पीछे क्यों रहते हैं, उन्होंने कहा खुदा चौथे आसमान पर रहता है वहां उसके तख्ता को चार फरिश्तों ने थामा हुआ है। यहां भी यह नहीं सोचा कि क्या खुदा के ये फरिश्ते भी अजर-अमर हैं ? विष्णु के चरण भी लक्ष्मी दबा रही है। दोनों स्थानों पर लगभग एक ही बात है।

इस प्रकार मुहम्मद साहब ने एकेश्वर वाद को तो वेदों से लिया तथा अन्य उचित-अनुचित बातों को तात्कालिक हिन्दू धर्म से ग्रहण किया था। डोरे-गण्डे, ताबीज, ऊपरि हवा आदि के विषय में भी हिन्दुओं तथा मुसलमानों के विचार समान है। सभी इन कपोल-कल्पित

www.thearyasamaj.org

मिथ्या बातों में विश्वास रखते है, यहां तक कि पढ़े-लिखे लोग भी इन्हें मानते हैं। महर्षि दयानन्द ने इस प्रकार के पाखण्ड पर प्रहार किया, किन्तु वर्तमान समय में तो रतनबीज की भांति यह नये-नये रूपों में जन्म ले रहा है। ऐसा इसलिए भी हो रहा है कि आर्यजन भी महर्षि के नियम, अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए का पालन मनोयोग से नहीं कर रहे हैं। वे पाखण्ड पर प्रहार न करके सुमधुर सर्वग्राही वेद प्रवचन कराने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। यही कारण है कि हिन्दुओं का यह तथाकथित धर्म भी फलता-फूलता-फैलता जा रहा है। समाज इसकी विकृतियों में अभी भी ग्रस्त है। समय-समय पर वामपंथियों तथा अन्य हिन्दू विरोधियों द्वारा इस पर आक्षेप भी होते रहते हैं। वे सायण आदि के भाष्यों के आधार पर वेदों में मांसभक्षणादि का प्रतिपादन करते हैं, हिन्दू धर्म के किसी भी धर्माचार्य में इन आक्षेपों का उत्तर देने का न तो साहस है तथा न ही इच्छा। आर्य विद्वान् ही इस प्रकार के आक्षेपों का निराकरण समय-समय पर करते हैं।

हिन्दू धर्म की एक बहुत बड़ी कमी उसका विखण्डित होना है। कितने ही वर्ग इनमें हैं, जो आपस में विरोधी भी है, जबकि मुस्लिम धर्म सुसंगठित है। शिया-सुन्नी परस्पर विरोधी होकर भी इस्लाम के ही उपासक है। शायद मुसलमानों ने संगठन की यह दृढ़ता वेद के संगठन सूक्त से ही सीखी है, हम इसका केवल पाठ मात्र करके वेदों के लिए लड़ते रहते हैं। वैदिक धर्म ही सत्य-सनातन-सार्वभौम-सार्वजनीन धर्म है। केवल आर्य समाज ही इसका प्रचार करता है। महर्षि दयानन्द ने हिन्दू धर्म की इस दुर्दशा को देख कर सभी अनार्ष ग्रन्थों को अप्रामाणिक कहकर एक मात्र वेद को प्रमाण माना था। यदि वैदिक धर्म को सुरक्षित रखना है तो पाखण्ड पर प्रहार करना ही होगा, अन्यथा यह तथा कथित हिन्दू धर्म वैदिक धर्म को दबा देगा।

पता - बी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली -३४

पीयूष — ब्रह्मचर्य का महत्व

शान्तिं कान्तिं स्मृतिं ज्ञानमारोग्यं चापि सन्ततिम्।
यदिच्छति महद्धर्मं ब्रह्मचर्यं चरेदिह॥ *(धनवन्तरि)*

भावार्थ : बुद्धिमान पुरुषों के लिए उचित है कि - वह ब्रह्मचर्य का नियमित पालन करें। यदि आप अपने जीवन में सुख शान्ति चाहते हैं व संसार को कुछ देना चाहते हैं तो आपको ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य ही करना चाहिए। क्या आप संसार में शान्ति से श्रेष्ठातिश्रेष्ठ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं? आप चाहते हैं- कि आप तेजस्वी बनें? आपकी स्मृति, आपका ज्ञान आपका स्वास्थ्य सुविस्तृत हो, आपकी सन्तानें उत्तम हो तो आइए इस श्रेष्ठति श्रेष्ठ रूप ब्रह्मचर्य का पालन कीजिए। आप ब्रह्मचर्यरूपी महान् वटवृक्ष का आश्रय लीजिए, आप अनुभव करेंगे कि - आपके जीवन में कितनी सुख शान्ति है। ब्रह्मचर्य से तो मृत्यु भी दूर भागती है। इसके समान पवित्र वस्तु संसार में और कोई नहीं है। आप ब्रह्मचर्य के महत्व की प्राचीन कथाओं से अपरिचित हैं? भीष्मपितामह की मृत्यु तक टल गई थी। ब्रह्मचर्य से ही देवता लोग मृत्यु को जीत लेते थे। आज भी समाज में ब्रह्मचर्य का प्रताप देखा जा सकता है। ब्रह्मचारी का प्रभाव अक्षुण्ण होता है। ब्रह्मचर्य की महिमा पर तो बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। भला आप इसके महत्व से अपरिचित हैं?

- सुभाषित सौरभ

www.thearyasamaj.org

जागरणात्मक दुष्टों की संगति से बचें : कन्हैयालाल आर्य

एक कृषक का बहुत बड़ा खेत था। उसमें गेहूँ की फसल लहलहा रही थी। कृषक फसल को देखकर प्रसन्न होता था किन्तु उस खेत में बहुत सारे चूहे उस कृषक की फसल को काट-काटकर नष्ट कर रहे थे। कृषक ने चूहों को पकड़ने के लिए एक पिंजरा बनवाया। उस पिंजरे में एक घुण्डी लगाकर रोटी का टुकड़ा देता था। जैसे ही चूहे पिंजरे में आते, रोटी खाने का प्रयास करते तुरन्त पिंजरे की खिड़की बन्द हो जाती और चूहे उसमें फंस जाते। कृषक प्रातःकाल उन चूहों को थोड़ी दूर एक वन में छोड़ आता। जहाँ चूहें हो जाते हैं वहां सांप भी पहुंच जाते हैं। सांप का स्वभाव वह अपनी बिल नहीं बनाता बल्कि चूहों के बिल में घुस जाता है। एक सांप ने भी ऐसा ही किया। धीरे धीरे वह उन चूहों को खाने लगा। एक दिन चूहे नहीं मिले तो वह रेंगता रेंगता उस कृषक के खेत में जा पहुंचा। वहां ज्यों ही सांप ने रोटी को खाने का प्रयास किया तो वह पिंजरे में फंस गया।

प्रातः काल हुआ, कृषक अपने खेत पर पहुंचा। कृषक ने देखा कि आज चूहे के स्थान पर सांप पिंजरे में फंसा पड़ा है। सांप ने गिड़गिड़ाते हुए कृषक से प्रार्थना की- मुझे इस कारागार से मुक्त कर दो। कृषक ने कहा-तुम तो विषधर हो ज्यों ही मैं तुम्हें मुक्त करुंगा, तुम मुझे ही काट डालोगे। सांप ने कहा- आप मुझ पर उपकार करोगे और मैं तुम्हें काटूंगा। मैं कृतघ्न नहीं हूं मैं किये हुए उपकार को नहीं भूलता। आप मुझ पर विश्वास कर लो। मनुष्य स्वभावतः दया भाव से परिपूर्ण होता है। कृषक ने सर्प पर विश्वास किया। उसे पिंजरे से मुक्त कर दिया। इतनी देर में एक अन्य व्यक्ति उस मार्ग से हाथ में लाठी लिये आ रहा था। सर्प ने उस कृषक से कहा- आपने मेरे प्राण तो बचा लिये हैं, परन्तु यह राहगीर लाठी लिये आ रहा है, यह मुझे मार डालेगा। आप कृपा करके मुझे कहीं छिपा लो। कृषक ने दयाभाव दिखाते हुए उसे अपनी आस्तीन में छिपा लिया और दूर वन की ओर चल दिया। कृषक ने कहा- अब वन आ गया है। आप अब निर्भय होकर इस वन में प्रवेश कर जाओ।

यह सुनते ही सर्प ने अपनी पूरी शक्ति के साथ कृषक को कस लिया और बोला- मैं तुम्हें काटूंगा। कृषक ने कहा- मैने तुम्हारी प्राण रक्षा की है और तुम मेरे साथ ऐसा प्रत्युपकार कैसे कर सकते हो ? सर्प ने कहा - आप मूर्ख हैं, आप नहीं जानते कि यह मनुष्य जाति सदैव हमारी शत्रु रही है, इसने कभी भी हमें क्षमा नहीं किया। जहाँ भी हमें देखते हैं, वहीं पर हमें मार डालते हैं। मैं भी तुम्हें काटूंगा। कृषक ने कहा - यह तुम्हारा व्यवहार उचित नहीं है। सर्प ने कहा- चलो, यह सामने ऊंट आ रहा है, उसी से न्याय करा लेते हैं। कृषक मान गया। सर्प ने उस ऊंट से सारी कहानी सुनाई और पूछा कि मुझे इसे काटना चाहिए या नहीं? ऊंट ने कहा - इसको काटने में कोई पाप नहीं है। यह मनुष्य जाति इतनी दुष्ट है कि मैं कुछ नहीं कह सकता। यह मनुष्य जाति न होती तो संसार के सभी पशु सुख से रहते। परमात्मा ने मेरी पीठ को उभारदार बनाया परन्तु दुष्ट मानव ने इस पर भी एक लकड़ी का ऐसा जाल बनाया कि इस पर दस-दस तो व्यक्ति बैठ जाते हैं और पांच-पांच क्विंटल बोझ और डाल देते हैं। इसलिए ऐसे अन्यायी जीव को काटने में कोई पाप नहीं है।

वह कृषक ऊंट का न्याय सुनकर बहुत व्याकुल हुआ। साहस करके वह सर्प ने कहा- एक बार आपने किसी को न्यायाधीश बनाया। एक बार मुझे किसी और को न्यायाधीश बनाने दीजिये। फिर जो निर्णय होगा, मुझे स्वीकार्य होगा। सर्प मान गया। सामने से एक और व्यक्ति आता दिखाई दिया। कृषक ने अपनी सारी कथा उस व्यक्ति को सुनाई और न्याय करने की प्रार्थना की। वह व्यक्ति सर्प की दुष्टता और कृषक की सज्जनता से यह जान लिया कि इस कृषक के साथ अन्याय हुआ है। वह व्यक्ति बुद्धिमान था। वह इस दयाशील कृषक की रक्षा करना चाहता था। उसने सर्प और कृषक से कहा - मैं जब तक उस स्थिति को जिस स्थिति में आप और सर्प को देख न लूँ तब तक मैं न तो निर्णय ले सकता हूँ और न ही न्याय कर सकता हूँ। अतः

मुझे उस स्थान पर ले चलो जहां से आपका पिंजरा रखा हुआ है।

वह व्यक्ति कृषक और सर्प उस खेत पर पिंजरे के पास गये। तब उस व्यक्ति ने सर्प से पूछा- तुम पिंजरे के अन्दर थे या बाहर। सर्प ने कहा - मैं पिंजरे के अन्दर था। उस व्यक्ति ने कहा - इस पिंजरे में तो आप आ नहीं सकते। जब तक तुम इस स्थिति में नहीं बैठ जाते है, मैं निर्णय कैसे कर सकता हूँ। यह सुनते ही सर्प उस पिंजरे में प्रवेश कर गया और वैसी स्थिति बना ली जैसे फंसने के समय बनाई थी। उस व्यक्ति ने सर्प से पूछा - पिंजरे की खिड़की बन्द थी या खुली थी ? सर्प ने कहा - पिंजरे की खिड़की बन्द थी। उस व्यक्ति ने कहा - यह कृषक पिंजरे के बाहर था या अन्दर। सर्प ने कहा - यह कृषक पिंजरे के बाहर था। उस व्यक्ति ने सर्प से कहा - रोटी को तुमने खींचने का प्रयास किया था। सर्प बोला - बिल्कुल किया था। वह व्यक्ति बोला - एक बार वैसा प्रयास फिर करो। सर्प ने ज्यों ही रोटी को खींचने का प्रयास किया वह पिंजरा बन्द हो गया। अब उस व्यक्ति ने सर्प से फिर पूछा- क्या यही स्थिति थी ? तुम पिंजरे के अन्दर थे, पिंजरे की खिड़की बन्द थी, यह कृषक पिंजरे के बाहर था। सर्प ने कहा - बिल्कुल यही स्थिति थी। उस व्यक्ति ने कहा - ऐ सर्प ! अब तुम मेरा न्याय सुनो। सर्प को पूरी आशा थी कि निर्णय मेरे पक्ष में होगा। परन्तु वह व्यक्ति इस कृषक की सज्जनता के कारण उसे दण्डित नहीं करना चाहता था और वह इस सर्प को कृतध्नता के कारण उसे दण्डित करके न्याय करना चाहता था।

अतः उस व्यक्ति ने सर्प से कहा - ऐ सर्प ! तुम दुष्ट हो, तुम पर दया करके इस कृषक ने भूल की है। परन्तु तुमने दया के बदले में प्राण लेने चाही। वह ठीक नहीं है। तुम्हें इस पिंजरे में ही बन्द रहना चाहिये। यही न्याय है। इस कृषक ने दया करके तुम्हारे प्राण बचाने की भूल की थी, उसका दण्ड यह भुगत चुका है। इतनी देर तक तुम्हारे आतंक से भयभीत रहा है। दया भी पात्र पर करनी चाहिये। कुपात्र पर नहीं। तुम दया के पात्र नहीं हो। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दया भी सुपात्र पर दिखानी चाहिये, कुपात्र पर नहीं।

इस कहानी को लिखने का मेरा उद्देश्य आपका केवल मनोरंजन करना नहीं है बल्कि उस आर्य (हिन्दू) जाति को सावधान करने का है। ऐ आर्यों ! जागो जिस देश व जाति का इतिहास नष्ट हो जाता है वह जाति व देश विश्व के मानचित्र से लुप्त हो जाता है। आर्य (हिन्दुओं) को नष्ट करने के लिए मुस्लिम एवं ईसाई संस्कृति प्रतिदिन विभिन्न षड़यंत्र कर रही है। भारतीय राजनेताओं विशेषकर कांग्रेस, वामदल, बसपाई, सपाई आदि भी राष्ट्रघाती कार्यक्रमों को संचालित करने में अपना गौरव मान रहे हैं। जब तक आर्य (हिन्दू) बहुसंख्यक है तब तक इस देश में शान्ति और गणतन्त्र रहेगा, परन्तु जहां-जहां भी मुस्लिम देश बनते जा रहे हैं वहां-वहां वर शान्ति समाप्त होती जा रही है।

२०१६ वर्ष पूर्व इस देश में कोई ईसाई नहीं था। १५०० वर्ष पूर्व कोई मुसलमान नहीं था। चार हजार वर्ष पूर्व कोई पारसी नहीं था। इससे पूर्व वैदिक धर्म था। कुछ धूर्त लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए सरल-स्वभाव आर्य (हिन्दू) के दिशा भ्रष्ट किया। दुष्ट राक्षस दैवी संस्कृति के पोषक आर्य (हिन्दुओं) को पददालित करते जा रहे हैं। आतंकियों की वृद्धि का एक ही कारण है वह प्रतिदिन कुरान तथा बाईबिल का न केवल पाठ करते हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियों को उसके अनुसार आचरण करने के लिए संगठित भी कर रहे हैं। वेद के अनध्याय आर्य (हिन्दुओं) की मृत्यु का कारण बनता जा रहा है। हम गीता पढ़ तो लेते हैं, परन्तु गीता के उस वाक्य -

क्लैव्य मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥

को भुला दिया है। श्रीकृष्ण जी अर्जुन को कहते हैं - हे अर्जुन ! नपुसंकता को मत प्राप्त हो। तुझे यह उचित नहं जान पड़ता। हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिए खड़ा हो जा। इस वाक्य के स्थान पर **अहिंसा परमोधर्मः** को अपना लिया। अहिंसा का त्रुटिपूर्ण अर्थ निकालते हुए धीरे-धीरे नपुसंक होता जा रहा है। अहिंसा का पालन करने के लिए दुष्टों की हिंसा भी अति आवश्यक है। आज हमारी संस्कृति को नष्ट करने के लिए जहां पाश्चात्य सभ्यता हमें लील रही है, मुस्लिम संस्कृति हमारे

अन्दर घुस कर लव जिहाद एवं अन्य उपायों से हमें निर्बल कर रही है। वहां हमारे युवकों की अपने धर्म सभ्यता संस्कृतिच के स्थान पर प्रमाद आलस्य एवं निष्ठा विहीनता की प्रबलता होती जा रही है। अब इस सोई हुई आर्य (हिन्दू) जनता को पुनः जगाने की आवश्यकता है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने होंगे :-

(१) प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाजों की स्थापना की जाये, ताकि उन्हें अपने गौरव से परिचित कराया जा सके।

(२) ऐसे राजनैतिक दल जो हमारे इतिहास को भ्रष्ट एवं नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें वोट न दें।

(३) वैदिक धर्म प्रचारक दल बने ताकि प्रत्येक स्थान पर आर्य वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान हो।

(४) आर्य (हिन्दू) विद्वानों को मुस्लिम और ईसाईयों के पापों के पोल खाते खोलने वाला साहित्य लिखना चाहिए जो जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

(५) प्रत्येक मुहल्ले, ग्राम व नगर में आर्यवीर दल की शाखायें खोलें तकि युवकों को ब्रह्मचर्य एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जा सके।

(६) गुरुकुलों में अपनी सन्तानों को भेजें। अन्यथा इन गुरुकुलों को आर्थिक सहायता प्रदान करें, क्योंकि देश को स्वतन्त्र कराने में इन गुरुकुलों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

अब समय आ गया है कि आस्तीन के इन मुस्लिम, ईसाई सर्पों को पुनः इनके जन्म स्थान पर भेज दिया जाये उसके लिए हम आर्यों को पुनः जागना होगा। परमात्मा कृपा करें कि हम ऋषि के ऋण से उऋण हो। यह तभी संभव है जब प्रत्येक आर्य (हिन्दू) आज से नहीं बल्कि अभी से यह संकल्प लें कि मैं पूरे विश्व को आर्य बनाने से स्वयं को तथा परिवार को आर्य बनाने का प्रयास करुंगा।

पता : ४/४४ शिवाजी नगर गुरुग्राम (हरियाणा)

डॉ. सुदर्शन देव आचार्य जी वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृंत

अजमेर। आर्यजगत् के उदीयमान युवा वैदिक विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, विभिन्न संस्थाओं के मार्गदर्शक, ओड़िसा भाषा के अनेक पुरतकों के सम्पादक तथा कुशल लेखक, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट ओड़िशा प्रदेश के संगठन मन्त्री, गुरुकुल हरिपुर जुनानी जि. नुआपाड़ा (ओड़िशा) के सफल संचालक पूज्य आचार्य डॉ. सुदर्शन देव जी को परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान अजमेर १३३वाँ महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह के पावन अवसर पर डॉ. प्रियव्रतदास वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस पुरस्कार में २१ हजार की नगद राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। पूज्य आचार्य जी सादा जीवन उच्च विचारों के आदर्श त्यागी, तपस्वी एवं साधक प्रवृत्ति के हैं, आपकी प्रेरणा से अब तक शताधिक आदर्श दैनिक अग्निहोत्री परिवार तैयार हुये हैं तथा सत्तर के लगभग आदर्श गृहस्थियों को वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित कराके अनेक संस्थाओं में सेवा के लिये नियुक्त किये हैं तथा अनेक ब्रह्मचारी आपकी प्रेरणा व मार्गदर्शन में अध्ययनरत तथा विविध क्षेत्रों में सेवारत हैं।

- संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु

www.thearyasamaj.org

कैसा गणतन्त्र ?

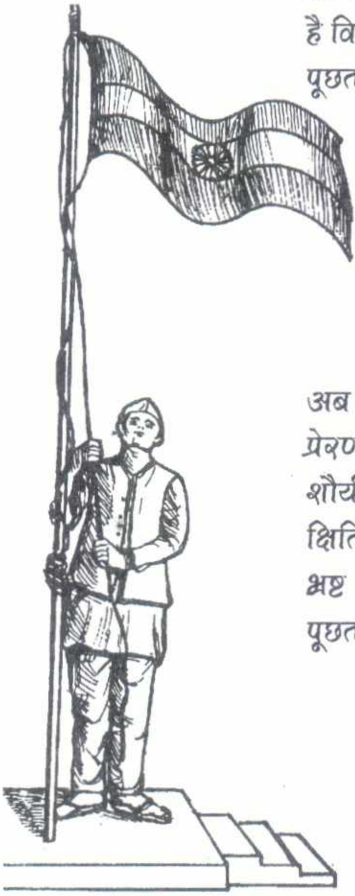

लाज से पलके झुकाए देश के हिम खण्ड हैं।
जल रहा है शौर्य अब तो संयमों के कुण्ड हैं,
स्वार्थ के अंधड़ में बनकर तृण उड़ी संवेदना,
मांग सूनी रह गयी विधवा, बनी हर कल्पना,
है विधुर हर गीत टूटा, भावना का तंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

संस्कृति के द्वार पर, अब नीति की सांकल नही।
आस्था के शीश पर, श्रद्धा का है आँचल नहीं,
नग्न स्वागत को खड़ी, है देश में निर्लज्जता,
अब पुरातत्वों में ही है, शेष अपनी सभ्यता,
देह तो स्वतंत्र लेकिन, आत्मा परतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

अब अनाथों की तरह, हर स्वप्न पलते नैन में।
प्रेरणा है खो गयी, अंधकारमय इस रैन में,
शौर्य साहस के कथानक, गूलरों के फूल हैं,
क्षितिज पर सम्भावना की, उड़ रही अब धूल है,
भ्रष्ट कर में खेलती यह, देश भक्ति यंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

है यही उपलब्धि अपनी, निर्धनों की झुग्गियाँ।
रेशमी बिस्तर पर टूटी, अनगिनत है चूड़ियाँ,
करकटों में खोजता, रोटी मुझे बचपन मिला,
सो रहा फूटपाथ पर, इस देश का यौवन मिला,
किस तरह बोलें कि, हम तो हो गए स्वतंत्र हैं।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

वह फसल आतंक की, घर में हमारे बेचते।
बैठ दर्शक दीर्घा में, हम तमाशा देखते,
अब तो हर नेतृत्व, बन बैठा मृग मरीचिका,
चित्र सारे हैं अधूरे, खो गयी है तूलिका,
पृष्ठ पर सत्ता है केवल, हाशिया जनतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है ।।

: प्रेषिका :
कु. समीक्षा आर्या, नन्दिनी भिलाई (छ.ग.)

प्रासङ्गिक चल चित्रों की सफाई

- डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

सफाई की बात पर इस ओर ध्यान जाना आवश्यक है कि आज की जो आधुनिक चल चित्र निर्माण शाला है उसे चलचित्रों से अश्लील फूहड़, दृश्य, संवाद व चित्र भी हटाने चाहिये, उनकी सफाई होनी चाहिए, ऐसे दृश्य संवाद व गीत जिन्हें यहां देना आवश्यक नहीं है, इन्हें आज के आधुनिक निर्माता, निर्देशकों द्वारा आधुनिक शब्द देना विकास का शब्द देना भारतीय संस्कृति का अपमान है। आज घर-घर में टी.वी. है प्रत्येक हाथ में मोबाइल जैसे इलेक्ट्रानिक साधन है, जिनसे ऐसे अश्लील चित्र व धारावाहिक आदि दिये जाते हैं। इनसे सामाजिक व सांस्कृतिक प्रदूषण होता है। यही कृत्य आज कल विद्यालयों की दीवारों पर देखा जा सकता है। जहां अश्लील सिनेमाओं के अश्लील तथा कामुक पोस्टर लगाए जाते हैं। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाते हैं, तब सर्वप्रथम इन कामुक व अर्धनग्न पोस्टरों पर उनका ध्यान जाता होगा। बालकों का मन श्वेत वस्त्र की भांति निर्मल होता है, जब वह बार-बार ऐसे दृश्य, पोस्टर आदि देखेगा तो पढ़ाई से अधिक उसका ध्यान इन पर होगा। यह हमारे लिए चिन्ता का विषय है।

गंगा की सफाई, पानी की सफाई, सड़कों, मोहल्लों व गलियों की सफाई के साथ इन पोस्टरों, सिनेमा के अश्लील दृश्य संवाद व गीत तथा अनावश्यक मारधाड़ के दृश्यों की भी सफाई होनी चाहिए। पहले मदर इण्डिया, गंगा मांग रही बलिदान, सिकंदरे आजम, उपकार, राजधानी जैसी फिल्में बनती थी, देशभक्ति के सुन्दर गीत होते थे, सामाजिक अच्छे दृश्य व कथानक होते थे। शिक्षाप्रद बातें होती थीं, रामायण, महाभारत धारावाहिक प्रसारण के समय सड़कें व यातायात रुक जाते थे। बाजार खाली व सूने हो जाते थे, परन्तु आज व्यावसायिक फिल्मों ने सब उलट पुलट कर दिया है।

आज के सिनेमा में शोरगुल अर्धनग्नता व अश्लील गाने, अश्लील संवाद अधिक है, जिनका यहां वर्णन करना आवश्यक नहीं, परन्तु इतना कहना पर्याप्त होगा कि इन दृश्य व संवादों का आज की नवयुवा पीढ़ी पर, बालकं पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? सिनेमा जगत के लोग इन अर्धनग्न कामुकता पूर्ण चित्र व संवादों को सामाजिक उन्नति कहते हैं, वह इन बातों को जो हम अश्लीलता का विरोध करते हैं, तो इसका मानसिक पिछड़ापन बताते हैं कि यह पिछड़ी बातें हैं, क्या अर्धनग्नता के दृश्य व संवाद सामाजिक उन्नति है ? यह विचारणीय प्रश्न है इससे समाज का भला कभी नहीं हो सकता क्योंकि सिनेमा निर्माताओं का यह-व्यवसाय है वह इसकी ओह में धनार्जन हेतु यह सब बातें करते हैं, परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसी शर्मसार करने वाले कथानक गीत संवाद व चित्रों से उन्नति कभी नहीं हो सकती, यह अवनति तो कर सकते हैं, उन्नति नहीं। समाज को अश्लीलता परोसना कहां की उन्नति है, इसीलिये समाज में आज पाश्चात्यता बढ़कर अश्लीलता, बलात्कार, यौन शोषण, पाखण्ड, मद्यपान व दुष्ट प्रवृत्तियां दुर्व्यसन बढ़ रहे हैं, इन्हीं से समाज गर्त में जा रहा है।

व्याभिचार, भ्रष्टाचार बढ़ रहे हैं, सिनेमा जगत में परोसे गए भौतिकवाद अर्थात् अथाह धन दौलत के दुरुपयोग से चकाचौंध से सामान्य जन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है, यही कारण है जहां धन दौलत के ढेर लगे हैं, आवश्यकता से अधिक आराम व प्रमाद के साधन है, पाश्चात्यता के रंग में रंगे हुए हैं वहां सत्य रुप से देखें तो परिवारं में प्यार कम वैमनस्य अधिक है, बेचैनी अधिक है, द्वेष है, उच्च रक्तचाप मानसिक तनाव जैसी रोगों से वह ग्रस्त हैं, वहां खुलापन नहीं है, शान्ति नहीं, अपनापन

www.thearyasamaj.org

नहीं है, है तो बहुत कम है, अधिक धन जहां होगा वहां भय का वातावरण बना रहेगा, जीवन का जो मूल शान्ति व निश्चितता है, नहीं मिल सकते।

आज आवश्यकता है कि ऐसे सिनेमा में भी सफाई होनी चाहिए, सिनेमा आज विज्ञान व ज्ञान युक्त हों, बालकों का भविष्य बनाने वाले हों, ऐतिहासिक क्रान्तिकारियों, शहीदों के जीवन चरित्र पर आधारित हो। देशभक्त व महान व्यक्तियों के जीवन से जिनमें प्रेरणा मिलती हो, आज कल टीवी पर भी डिस्कवरी, इतिहास (हिस्ट्री) जैसे साफ सुथरे चैनल चल रहे हैं, भक्ति भावपूर्ण सत्य पर आधारित चैनल चल रहे हैं कई टीवी व सिनेमा के निर्माता निर्देशक इस बात का ध्यान भी रखते हैं कि अश्लीलता फूहड़पन न हो न अश्लील गीत संवाद हो न अश्लील दृश्य हों, अपितु सिनेमा साफ सुथरी छवि प्रस्तुत करने वाले हों।

सिनेमा जगत की सफाई भी आवश्यक है, नगरों में घर से निकलते ही अधिकांशतः विद्यालयों की दीवारों पर अश्लील पोस्टर लगे रहते हैं, सिनेमा के यह पोस्टर भी बच्चों विद्यालयों के मन को दूषित करे बिना नहीं रह सकते। छोटे बालकों विद्यार्थियों का मन श्वेत चादर की भांति होता है, जब टीवी मोबाईल व बाजार की दीवारों पर विद्यालयों की दीवारों पर यह अत्यन्त अश्लील चित्रों के बड़े बड़े पोस्टर लगे मिलते हैं, तो इसका बुरा प्रभाव उनके छोटे से मन व मस्तिष्क पर अवश्यक पड़ेगा। अतः इन सब अश्लीलताओं की भी सफाई आवश्यक है।

घर में, आंगन में, गलियों में, सड़कों में, मोहल्लों में, बाजारों में, नदियों व कारखानों में सभी जगह सफाई होनी चाहिए, सिनेमा जगत में भी सफाई होनी चाहिए और आर्यसमाज के अनुसार, वैदिक धर्म के अनुसार शरीर की व मन की भी सफाई होनी चाहिए। आत्मा का भोजन ज्ञान है, जो वेद से मिलता है। इस वेद ज्ञान की शिक्षा टी वी पर, मोबाइल पर एवं विद्यालयों में भी होनी चाहिए। जिनसे हमारे परिवार समाज का विकास होकर, देश उज्जवल निर्मल गौरवशाली बनें।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा, जिला-बुलन्दशहर २०३१३१, (उ.प्र.)

व्यायाम शिक्षक रुपेन्द्र आर्य का सम्मान

सिलाड़ी। राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत शा.उ.मा. विद्यालय बड़ेभंडार में सप्त दिवसीय शिविर में विशेष सहयोग देने पर व्यायाम शिक्षक श्री रुपेन्द्र आर्य को ग्राम सिलाड़ी में खरसिया विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री उमेश पटेल द्वारा प्रशस्ती पत्र एवं मेडल देकर सम्मान किया गया।

www.thearyasamaj.org

पुण्य संस्मरण

पंजाब केशरी-लाला लाजपतराय

२८ जनवरी जन्म दिवस पर विशेष

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के जिन महापुरुषों ने स्वदेश हित के लिए सर्वोत्कृष्ट बलिदान किए उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है ये वही बलिदानी थे जिन्होने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्रभक्ति का पाठ उन्होंने स्वामी दयानन्द से सीखा था। और आर्य समाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाये। जन्म से वैश्य किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुंदिके में २८ नवंबर १८६५ को हुआ। उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे। उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं का गहराई से अध्ययन किया था। दीनेमुहम्मदी में उनकी गहरी आस्था थी। अग्रवाल बनिया होते हुए भी वे नियमित रूप से नमाज पढ़ते थे, रमजान के महीने में रोजा रखते थे।

१८८० में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाला लाजपतराय लाहौर आए। गर्वमेंट कालेज से एफ.ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएँ साथ-साथ उत्तीर्ण की। १८८२ में वर्ष के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये, लाला साईदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने। पं. गुरुदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहां कालेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे वहां ये लोग आर्यसमाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता थे। जब ३० अक्टूबर १८८३ को आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का अजमेर में निधन हुआ। तब आर्यसमाज लाहौर की ओर से ८ नवंबर को एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इसमें निश्चय हुआ कि दिवंगत महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज के नाम से एक ऐसी शिक्षण संस्था की स्थापना की जावे जिसमें संस्कृत एवं हिन्दी के उच्च स्तरीय शिक्षण, वेदादि शास्त्रों की गंभीर शिक्षा के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था हो। डी.ए.वी. कालेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपत राय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य बनकर कालेज की स्थापना हेतु धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगर में जाते रहे। जब यह महाविद्याय सुचारु रूप से चल पड़ा तब इसकी शिक्षा में नीति को प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी.ए.वी. कालेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरुप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्य नेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए। किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

१९२० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चलाए गये और सरकारी स्कूलों और कालेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी.ए.वी. कालेज के संचालकों को देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कालेज को बंद कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने ऐसा कदम उठाने से इन्कार कर दिया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जा सकती है। लाला लाजपतराय ने १८८५ में वकालत की परीक्षा पास की। कुछ काल तक रोहतक तथा हिसार में वकील के रूप में कार्य करने लगे। शीघ्र ही उन्हें अपने कार्य में आशा से अधिक सफलता मिली। कानून के पेशे में भी उनकी प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी।

१८८८ में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। १९०६ में वे पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहां से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया। लाला जी ही प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतंत्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचार धारा का प्रवेश कराया। उन्होंने १९०५ में बनारस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय उनका स्वागत करते का डटकर विरोध किया। सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था इसका परिणाम कांग्रेस में पड़ी फूट के रूप में प्रत्यक्ष हुआ और पं. मदनमोहन मालवीय, रासबिहारी घोष तथा फिरोज शाह मेहता आदि नरम नेताओं ने महसूस कर लिया कि भारत अब भावी राजनीति को स्वरूप देना लाला लाजपतराय और उनके साथियों के अधिकार में आ गया है।

पंजाब में किसान जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीत सिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के माण्डले नगर में नजरबंद कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचार पूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अवहेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लौटने पर एक लोकप्रिय जननायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता उन्हें इस आंखों में उठा लिया। आर्यसमाज में रहकर ही लाला जी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। १९११ में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए। उन्होंने अनाथ बालकों को आर्य अनाथालय फिरोजपुर में प्रवेश कराया, जबकि ईसाई मिशनरी उन्हें लेने को तैयार बैठे थे। १९०५ में कांगड़ा में भयंकर भूकंप ले जन-धन की अपार क्षति हुई। उस समय भी वे भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर पहुंचे। इस कार्य में डी.ए.वी. कालेज लाहौर के छात्र लालाजी के साथ थे। उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त में जब १९०७ में भयंकर दुष्काल पड़ा तब लालाजी तुरंत सहायता कार्यों में जुड़ गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। १९२० में विदेश यात्रा से लौटने पर उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन पर समर्थन किया। इसी वर्ष कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। १९२४ में उन्होंने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए स्वामी श्रद्धानन्द पं. मदनमोहन मालवीय की ही भांति लालाजी का कांग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टिकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसलिए उन्होंने हिन्दू सभा सच्चे राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि में संकीर्ण या साम्प्रदायिक जमात नहीं समझी जाती थी। इसलिए १९२५ में हिन्दू सभा के कलकत्ता अधिवेशन के वे सभापति बनाए गए।

१९२८ में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायजा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन कमीशन यहां भेजा गया कांग्रेस ने इसका बहिष्कार का निर्णय लिया। ३० अक्टूबर को कमीशन लाहोर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेल्वे स्टेशन पर ही काले झंडे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने धारा १४४ लगा दी। तथापि सैकड़ों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। सायमन वापस जाओ के नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला निहत्थे नागरिकों पर डण्डा प्रहार होने लगा। अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढ़े शेर को मार्मिक आघात पहुंचा। उसी सायंकाल आयोजित जनसभा में नर केसरी लाला लाजपतराय ने गर्जनापूर्ण स्वर मेंकहा कि मेरे शरीर पर पड़ी

विदेशी सरकार की एक-एक लाठी अंग्रेजी राज्य के कफन की कील साबित होगी। इसी लाठी प्रहार से पीड़ित लाला लाजपतराय का १७ नवंबर १९२८ को निधन हो गया।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक श्रेष्ठवक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्त्ता, समर्पित समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री गंभीर चिंतक तथा विचारक थे। उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेजी में अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की भारत तथा विदेश के कतिपय महापुरुषों के उनके द्वारा लिखित जीवन चरित अत्यंत लोकप्रिय हुए। सम्राट अशोक, शिवाजी, स्वमी दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र तो उन्होंने लिखे ही इटली के देशभक्त तथा मैजिनी के जीवन चरित्रों ने उन्हें अभूतपूर्व ख्याति दिलाई। देशवासियों में स्वातंत्र्य चेतना जागृत करने में इन ग्रन्थों की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण मानी गई कि विदेशी शासन में उन जीवनियों पर प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय शिक्षा तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी उन्होंने प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। उनकी लिखी दि आर्यसमाज नामक पुस्तक १९१४ में प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है।

पता : ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर (राज.)

-: कविता :-

"मैं हूँ दयानन्द"

लोगों ने मुझको जहर भी दिया।
बदले में मैंने उन्हें अमृत दिया॥
मैंने किसी को दुःख न दिया।
फिर भी लोगों ने विरोध किया॥
कुछ लोगों ने तो मुझपर पत्थर भी फेंके।
कुदृष्टियों से मुझको देखें॥
लेकिन मुझे सत्य का प्रचार करना था।
दुःखी लोगों के दुःखों को हरना था॥
ऋषियों को मैं भूल नहीं सकता।
संध्या यज्ञ के बिना रह नहीं सकता॥
मैं ऋषियों के सपनों को साकार करूंगा।
सत्य कहने में कभी न डरूंगा॥
मैं विरोधियों को भी सत्या कहता हूँ।
ईश्वर की वाणी का प्रचार करता हूँ॥
मानवता के नींव को हिलने न दूंगा।
ऋषियो के सपनों को डूबने न दूंगा॥
मैं अन्यायियों के दुःखों को भी हरता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ॥७॥
मेरे पिता जी एक जमींदार थे।
मेरे चाचा जी बहुत बीमार थे॥
बहन भी मरी और चाचा भी मर गये।
पता न चला ये दोनों किधर गये ?॥
मैंने सोचा अब मैं क्या करूंगा।
दुःखियों के दुःखों को हरुंगा॥
सदा वेद-रक्षार्थ ही चिन्तन करता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूं मरता हूँ॥८॥
शिवरात्रि के दिन मैंने सोचा।
सच्चे शिव की खोज करूंगा॥
जो सम्पूर्ण संसार का मालिक।
उससे मैं जरुर मिलूंगा॥
शिवरात्रि दिन एक चूहा आया।
उसे देख मुझे समझ न आया॥
शिवपिण्डीपिर चढ़े मोदकों को।
चूहा मजे से खाने लगा॥
मैंने उसको गौर से देखा।
वह मुझे देखकर भागने लगा॥

००-००

- शेष अगले अंक में

रचयिता : डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री,
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा)

अनुभवात्मक वैदिक धर्म के अनन्य वीर - डॉ. धर्मवीर

- **प्रेमप्रकाश शास्त्री**, महासमुन्द (छ.ग.)

प्रतीत नहीं होता कि आज हमारे बीचडॉ. धर्मवीर जी नहीं रहे। वैदिक वाङ्मय व संस्कृत साहित्य के उद्‌भट विद्वान् आचार्य धर्मवीर जी से मेरी पहली मुलाकात १९८२ में गुरुकुल प्रभात आश्रम के दशाब्दी समारोह के अवसर पर हुई उस समय मैं शास्त्री द्वितीय वर्ष का विद्यार्थी था। सम्पूर्ण गीता कंठस्थ करने पर उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और आशीर्वाद प्रदान किया। तदपुरान्त १९८६ को जब मैं आर्यसमाज शास्त्रीनगर मेरठ में पुरोहित था तब डॉ. धर्मवीर जी वार्षिकोत्सव में पधारे थे। वेद के मर्म को उद्‌घाटित करने वाली उनकी सुबोध व सरस शैली के कारण वे मेरी श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु बन गए। गुरुकुल के छात्रों के लिए वे तन, मन, धनसे समर्पित थे, ब्रह्मचारी व आर्यजनों के लिए उनका घर मानो खुला दरबार था।१९८६ के वे दिन भुलाए नहीं भूलते जब मैं राजस्थान लोक सेवा आयोग की परीक्षा देने अजमेर पहुंचा तब उन्होने मुझे अपार स्नेह प्रदान किया उसके लिए मैं आजीवन उनका ऋणी रहूंगा।

एक लंबे अंतराल के बाद जब मैं स्थानान्तरित होकर बिलासपुर पहुंचा तब लगा मेरे सौभाग्य के दिन पुनः लौट आए। आर्यसमाज बिलासपुर, आर्य वस्त्रालय तथा श्री मुकुन्द माधव जी तथाअन्य कई परिवारों में श्रद्धेय आचार्य प्रवर का आगमन हुआ। स्व. विक्रमादित्य जी गुप्त, श्री लक्ष्मी प्रसाद गुप्त, श्री सुधीर जी व श्री सौमित्र जी के अथक प्रयास से कई ऐसे अवसर आए जब धर्मवीर जी के अमृतमय वेदोपदेश सुनकर जीवन को धन्य करने का सौभाग्य मिला। जब वे बोलते थे तो लगता था किसी आप्त पुरुष की तपःपूत अमृत वाणी की वर्षा हो रही है। वेद, उपनिषद् दर्शन, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, विदुरनीति व पारिवारिक, चाणक्यनीति आदि अनेक ग्रंथो पर आधारित वैज्ञानिक, समसामयिक व पारिवारिक उनके प्रवचन आज भी मानस पटल पर जीवित हो उठते हैं और सांसारिक जनों को श्रेय मार्ग की ओर प्रवृत्त कराते हैं। पारिवारिक जनों में और विशेष तौर पर बच्चों में उनके विचारों के अनुकूल चर्चा करने तथा उनकी तर्कपूर्ण जिज्ञासाओं को शांत करने में वे सिद्धहस्त थे। बिलासपुर प्रचार यात्रा प्रसंग में ही उनकी प्रेरणा से ही परोपकारी के आजीन ग्राहक सदस्यों की संख्या सैकड़ों से बढ़कर हजारों की संख्या में पहुंच गई। अपनों पर विश्वास करने की अटूट प्रवृत्ति आज भी मेरे मनस्पटल पर अंकित है जब वे बड़ी सहजता से मेरी ओर परोपकारिणी सभा की रसीद बुक व राशि बढ़ा दिया करते थे। यहां पर मैं उनको बहुत निकटता से पहचान सका। इसी अवसर पर मैंने उनसे गुरुकुल नवप्रभात आश्रम नूआँपाली पधारने के लिए प्रार्थना की। बड़े सहज भाव से उन्होंने उत्तर दिया चिंता क्यों करते हो ? ईश्वर की दया होगी तो अवश्य चलेंगे। ऐसी आस्तिकता के दर्शन उन जैसी महान् विभूतियों में संभव थे।

बिलासपुर का एक रोचक प्रसंग आज़ भी मुझे स्मरण है श्री सुधीर जी के साथ जब मैं उनके स्वागत के लिए स्टेशन पहुँचा था तो आचार्य जी सपत्नीक पधारे हुए थे। दोनों को देखकर मेरा हृदय गद्‌गद् हो उठा और मैने आचार्य जी से कहा कि मुझे भी १९८६ में आप के घर का वही दही याद है जो आप दोनों ने मुझे खिलाया था। इस पर चुटकी लेते हुए आचार्य प्रवर ने कहा था। भला आदमी ! फोन कर देता तो हम साथ ले आते। ऐसी सरलता की प्रतिमूर्ति थे डॉ. धर्मवीर जी।

आज डॉ. साहब नहीं रहे किन्तु उनकी वाणी व लेखनी आने वाली पीढ़ियों को सदैव वैदिक धर्म के आलोक से आलोकित करती रहेगी। महात्मा भर्तृहरि के शब्दों में

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषाम् यशः काये जरामरणजं भयम्॥

संसार में वे रससिद्ध कवीश्वर विजयी होते हैं जिनके यश रुपी शरीर में बुढ़ापा और मृत्यु का भय नहीं होता है। उस दिव्यात्मा को नमन ! प्रखर वक्ता को नमन ! ओजस्वी लेखनी के धनी को नमन !

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से वाइरल संक्रमण, खसरा, छोटी माता, कर्णमूल रोगों का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

बदलता हुआ मौसम, बरसात के पानी से भीगना, रिमझिम फुआरों का आनंद किसे नहीं अच्छा लगता, लेकिन उसके साथ आते हैं तमाम तरह के वाइरल संक्रमण। फिर उसके साथ प्रदूषित पानी, गंदगी, विभिन्नतरह के वाइरल और बैक्टीरियल संक्रमणों के जिम्मेदार होते हैं।

वाइरल संक्रमण कोई आवश्यक नहीं कि बरसात के मौसम में ही हो, होली के आसपास और अन्य महीनों में, खसरा, छोटी माता, कर्णमूल, इनफ्लूएन्जा डेंगू बुखार का हो जो फिर प्रदूषित पानी की वजह से पीलिया, मियादी बुखार जो कि मूलभूत बैक्टीरियल संक्रमण है आम इन्सान की जिन्दगी को तंग करते रहे हैं। होमियोपैथी इन वाइरल संक्रमणों को ठीक करने में अधिक सक्षम और कारगर सिद्ध हुई है।

खसरा (Measles):- खसरा एक संक्रमक तीव्र जुकाम, आंखों से पानी आना, खांसी, सर्दी लगना, बुखार और चकत्ते पड़ना। जैसे कि चकते पड़ते हैं, आंखों से पानी निकलने और रोशनी असह्य लगने के साथ बुखार १०५° तक बढ़ जाता है। अगर उचित ढंग से इलाज न किया जाये तो न्यूमोनिया होने का खतरा बना रहता है। यह संक्रामक रोग है अतः बच्चों के साथ बड़ी उम्र वाले व्यक्ति भी प्रभावित हो सकते हैं।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- मोर्विलियम, एकोनाइट, बेलाडोना, एपिस, ब्रायोनिया, लक्षण के आधार पर दी जा सकती है।

छोटी माता (Chicken Pox) :- यह भी एक संक्रमित रोग है। बच्चे और बड़े दोनों को समान रूप से इससे संक्रमित हो सकते हैं। प्राथमिक लक्षणों में शारीरिक थकावट, हल्का बुखार और शरीर में फफोलों का उत्पन्न होना जो कि छोटी माता की पहचान भी होती है। तेज बुखार, बार-बार प्यास लगना, तेज बुखार के दौरान आंय-बांय बकना, प्यास न के बराबर, छालों में पानी का आ जाना, दानों में खुजली, बेचैनी।

प्रमुख औषधि :- वेरियोलिनम, रसटाक्स, मर्कसाल, फेरस फास, कालीम्यूर आदि।

कर्णमूल (Mcumps) :- कर्णमूल भी संक्रामक रोग है जिसकी पहचान एक या एक से अधिक गलक्षत (Parotid Gland) की सूजन के साथ हल्का बुखार, मुंह खोलने में परेशानी और दर्द के रूप में जानी जाती है। अगर उचित ढंग से चिकित्सा न करायी जाये तो पुरूषों में अंडकोष और महिलाओं में स्तन की सूजन होने का खतरा बना रहता है।

प्रमुख औषधियां :- बेलाडोना, पल्साटिला, पाइलोकरपीन, फाइटोलैक्का आदि औषधियाँ योग्य होमियो चिकित्सक की सलाह लेकर उपरोक्त संक्रमणों से छुटकारा एवं रोकथाम किया जा सकता है।

संक्रमण रोगों में पहली बार चुनी गई औषधि जो कई रोगियों में संपूर्ण लक्षणों को कवर करती है, जीनस इपीडेमीकस कहलाती है। यही कारण है कि पिछले कई संक्रमण महामारियों में होमियोपैथी औषधियों ने अपना सर्वश्रेष्ठ असर दिखलाया। कई रोगियों को संक्रमण रोगों से छुटकारा मिला।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबंध, रायपुर (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान संस्मरण दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय विश्व शान्ति महायज्ञ सोल्लास सम्पन्न

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द सेवाश्रम, आर्यसमाज टाटीबन्ध, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दिनांक २१, २२ व २३ दिसम्बर २०१६ को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का ९०वाँ बलिदान दिवस कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो गया।

विशाल शोभा यात्रा

दिनांक २१ दिसम्बर २०१८ बुधवार को प्रातःकाल ८.३० बजे से शोभा यात्रा महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध से बस्ती से गुरुद्वारा होते हुये एम्स के सामने से जी.ई. रोड पर ऋषि दयानन्द के जय-जयकार करते हुये एवं स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को संस्मरण करते हुये १००० बालक-बालिकाएं, शिक्षक-शिक्षिकायें, प्रबुद्ध नागरिकों एवं सभा के पदाधिकारियों द्वारा लगभग २ घंटे के भ्रमण के बाद विशाल शोभा यात्रा समाप्त हुआ। तदोपरान्त १०.३० बजे ओ३म् ध्वजोत्तोलन किया गया, आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। तद्परान्त विश्व शान्ति महायज्ञ सभा प्रधान के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। दोपहर २ से ५ बजे तक आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) का सुमधुर भजन का कार्यक्रम हुआ साथ ही रायगढ़ से पधारे श्री जगमोहन आर्य एवं साथी आचार्य कर्मवीर जी का छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं को लक्ष्य कर महत्वपूर्ण वेदोंपदेश अन्त में पं. नंदकुमार आर्य का सुमधुर संगीतमय भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मंच पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, आचार्य कर्मवीर शास्त्री (सम्पादन अग्निदूत मासिक पत्रिका) दुर्ग, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री व मुख्य अधिष्ठाता आदि सभा के पदाधिकारीगण, आचार्य संत काशीनाथ चतुर्वेदी, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, श्री लोकनाथ आर्य आदि आर्यसमाज के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहे।

विश्व शान्ति महायज्ञ के मुख्य यजमान के रुप में श्री विनोदसिंह प्राचार्य सपत्नीक, श्री पुरुषोत्तम वर्मा उपाचार्य सपत्नीक, आर्यसमाज टाटीबन्ध केश्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव सपत्नीक, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा सपत्नीक एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकायें उपस्थित रहे। दर्शक दीर्घा में लगभग १००० नागरिक एवं विद्यालय के छात्र-छात्रायें उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति देकर कृतकृत्य किया।

यज्ञ, भजन, प्रवचन

द्वितीय दिवस दिनांक २२ दिसम्बर २०१६ गुरुवार को प्रातः ९ बजे से १०.३० बजे तक विश्व शान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम हुआ। यज्ञोपरान्त १०.३० बजे से दोपहर १.०० बजे तक एवं दोपहर २ बजे से सायं ५ बजे तक भजन, प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अंशुदेव आर्य जी ने विशेष रुप से छात्र-छात्राओं को वैदिक धर्म व आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं स्वामी श्रद्धानन्द के राष्ट्रीय जीवन से परिचित कराने के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से कई हजार रुपयों का प्रोत्साहन व पुरस्कार राशि प्रदान की। यह कार्यक्रम बड़ा ही रोचक ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हुआ। इस प्रतिस्पर्धा को सही अर्थों में सफल बनाने के लिए सभा कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य एवं महामंत्री श्री दीनानाथ वर्मा एवं संजय शास्त्री जी का अमूल्य सहयोग रहा।

श्रद्धानन्द बलिदान संस्मरण दिवस एवं पूर्णाहुति

दिनांक २३ दिसम्बर २०१६ को प्रातः ९ बजे विश्व शान्ति महायज्ञ की पूर्णाहुति की गई, जिसमें मुख्य यजमानों,

www.thearyasamaj.org

शिक्षक-शिक्षिकाओं व छात्र-छात्राओं द्वारा यज्ञ की वेदी पर वैदिक मंत्रों द्वारा आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बने। यज्ञ के ब्रह्मा सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य रहे। साथ में आचार्य कर्मवीर शास्त्री भी उपस्थित रहे।

पूर्णाहुति उपरान्त ऋषि लंगर में हजारों श्रद्धालुओं ने भोजन के रुप में प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज राजेन्द्रनगर, कटोरातालाब, आर्यसमाज कोहका, आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई सहित अन्य आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री दयाराम वर्मा, श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध का विशेष सहयोग रहा। विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह जी तथा उनका पूरा विद्यालय परिवार के अथक परिश्रम से यह विशाल कार्यक्रम सफलता की ऊंचाई प्राप्त कर सका।

संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा. वि. टाटीबंध रायपुर

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का सफल आयोजन

रोहतक। मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नोर्थ अमेरिक जाट चैरिटी के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १३ नवंबर १६ को चौधरी छोटूराम धर्मशाला रोहतक के भवन में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः ८ बजे कन्या गुरुकुल शिखापुरम् की प्राध्यापिका ऊर्मिला आर्या के ब्रह्मत्व तथा प्रवेश आर्या के संयोजकत्व में आरम्भ हुआ। यजमान आसन पर विराजमान रहे डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. रणवीर सिंह खासा, श्री विनोद हुड्डा, श्री अर्जुनसिंह सपरिवार तथा डॉ. श्यामदेव जी एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों के साथ-साथ अनेक आर्यजनों एवं छात्र-छात्राओं ने यज्ञ में आहुति प्रदान की। ब्रह्म प्राध्यापिका ने यज्ञोपरान्त यज्ञ की महिमा का गुणगान किया एवं संयोजिका बहन प्रवेश आर्या ने सभी यजमान एवं उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी का परिचय कराते हुए मानव सेवा प्रतिष्ठान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह के इस कार्यक्रम में तेरह विद्वान्, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं , भजनोपदेशकों तथा पुरोहितों का सम्मान करते हुए उन्हें अभिनन्दन पत्र, शॉल, स्मृति चिन्ह एवं ग्यारह तथा पन्द्रह हजार रुपये की सम्मानित राशि से सम्मान किया गया। अन्त में मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता प्रधान रामपाल शास्त्री ने सभी आगन्तुक महानुभावों एवं अभ्यागत अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया, तदुपरान्त ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : रामपाल शास्त्री

विवाह बन्धन में बंधे

नेमदारगंज (बिहार)। आर्यसमाज नेमदारगंज (नवादा) के पुरोहित सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत के सुपुत्र हर्षबर्धन आर्य का विवाह संस्कार वैदिक विधि से ग्राम हरला गांवा (झारखण्ड) के श्री सरयूलाल जी की सुपौत्री श्री मनोज कुमार बरनवाल की सुपुत्री आयुष्मती प्रीति कुमारी के साथ दिनांक १७ नवंबर २०१६ को नवादा नगर सद्भावना चौक अवस्थी होटल में श्री संजय सत्यार्थी एवं श्री सन्तशरण आर्य जी के पौरोहित्य एवं उभय पक्ष के पारिवारिक जनों तथा गणमान्य अतिथियो की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। श्री सौरभ कुमार सुपुत्र श्री रतनलाल ग्राम नेमदार गंज का शुभ पाणिग्रहण संस्कार राजधनवार (झारखंड) के श्री जनार्दन साहू की सुपुत्री कुमारी खुशबू के साथ दिनंक २४ नवंबर २०१६ को नवादानगर के साहू सदन में दोनों परिवारों के अभिभावकों एवं गणमान्य सज्जों की उपस्थिति में श्री संजय सत्यार्थी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

आयुष्मती वेदाश्रिता सुपुत्री श्री सुनील कुमार उपप्रधान आर्यसमाज नेमदारगंज ग्राम सुपौल नेमदारगंज निवासी का विवाह संस्कार सन्दरपुर मुंगेर निवासी श्री श्याम सुन्दर प्रसाद यादव जी के सुपुत्री श्री राकेश कुमार के साथ आर्यसमाज मंदिर नवादा नगर के प्रांगण में श्री संजय सत्यार्थी के पौरोहित्य में दिनांक २५ नवंबर २०१६ को सम्पन्न हुआ। दोनो पक्षों के अभिभावक, ईष्ट मित्रगण उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान कर वर-कन्या को दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने की प्रेरणा दी।

संवाददाता : श्री संजय सत्यार्थी आर्यसमाज मंदिर, नेमदारगंज नवादा नगर (बिहार)

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज सेक्टर–६ भिलाई का ५७वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

भिलाई। आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई का त्रि-दिवसीय ५७वाँ वार्षिकोत्सव १६, १७ एवं १८ दिसम्बर २०१६ को ऋग्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों इस उत्सव की शोभा बढ़ाई। इनमें १७ गुरुकुल आश्रमों के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा, यशस्वी प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी, होशंगाबाद से पधारे यज्ञ के ब्रह्मा अंतराष्ट्रीय विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी तथा फरीदाबाद से पधारे भजनोपदेशक पं. प्रदीप शास्त्री प्रमुख थे।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर एक कार्यक्रम सियान सदन नेहरु नगर में आयोजित किया गया, जिसमें आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने भारतीयों को अपनी भारतीयता पर गर्व करने हेतु प्रेरित किया तथा भारतीय नाम, वस्त्रों, भोजन, संगीत की विशेषता बताते हुए उन पर गर्व करने को कहा। उन्होने ऋषि दयानन्द की प्राचीन भारत से लेकर वर्तमान काल तक की प्रासंगिकता बताई।

कार्यक्रम का शुभारम्भ १६ दिसम्बर को झण्डा ध्वजारोहण आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी के कर कमलों से हुआ। रोज प्रातः हवन, भजन एवं प्रवचन तथा सायं भजन, प्रवचन दो सत्रों में आयोजित किए गए।

१६ दिसम्बर की दोपहर को शालेय बच्चों के लिए वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज विषय पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसमें डी.ए.वी. तथा आर्यसमाज से संबंधित ११ स्कूलों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर प्राप्त करने वाली टीमों को पुरस्कृत किया गया।

अंतिम दिवस १८ दिसम्बर १६ को यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी ऋग्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति संपन्न कराई। इसमें भारी संख्या में जन समुदाय ने स्वाहा के उच्चारण के साथ अपने इष्ट सुखों की प्राप्ति हेतु हवन में आहुति प्रदान की। आचार्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सामान्यतया प्रवचनों अथवा धार्मिक ग्रन्थों में भगवान भक्ति और पूजा की विधि बताई जाती है। केवल आर्यसमाज और सत्यार्थ प्रकाश ऐसा ग्रन्थ है जो जन्म से लेकर जीवन के सभी चरणों को सही रुप से जीने की विद्या सिखाता है। उन्होने आगे बताया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने चारों आश्रमों में सबसे श्रेष्ठ गृहस्थ आश्रम को बताया है। उन्होने सुचारु रुप से चलने वाले गृहस्थ आश्रम को स्वर्ग की संज्ञा दी और इसको कल्प वृक्ष भी कहा जिसमें रहकर सभी कामनाएँ पूर्ण हो सकती है।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी ने वेद मंत्रों की व्याख्या पर बल दिया और उन्होने कुछ वेद मन्त्रों की व्याख्या दी। फरीदाबाद से पधारे भजनोपदेशक पं. प्रदीप शास्त्री ने अपने भजनों में ऋषि दयानन्द की महिमा का बखान किया। गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने अपने आशीर्वचन में कहा कि हिन्दू समाज की बढ़ोतरी के लिए उपस्थित छूआछूत को मिटाना बहुत आवश्यक है।

गुरुकुल आश्रम आमसेना से आए ब्रह्मचारियों द्वारा योग एवं व्यायाम प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा लाठी चालन व तीरअंदाजी का भी प्रदर्शन किया। उपस्थित जन समुदाय ने तालियां बजाकर भरपूर प्रशंसा कर उनका उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारीगण, आर्यसमाज कोहका, आर्यसमाज सुपेला व आर्यसमाज दुर्ग के पदाधिकारी व सदस्यगण सहित हजारों की संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे। अंत में ऋषि लंगर में भक्तजनों ने प्रसाद ग्रहण किया। मंच का संचालन मंत्री श्री रवि आर्य तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रधान श्री जितेन्द्र प्रकाश सल्होत्रा ने किया।

संवाददाता : रवि आर्य मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई

तेजोऽसि शुक्रमऽसि–अमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानाम् अनाधृष्टं देवयजनमसि ॥

www.thearyasamaj.org

डी.ए.वी. छाल ने बनाया कीर्तिमान

छाल । बाल विज्ञान कांग्रेस का २४वां राज्य स्तरीय सेमीनार २१-२२ नवंबर को जवाहर नवोदय विद्यालय कुरुद जिला धमतरी में आयोजित हुआ, जिसमें छत्तीसगढ़ के २५ जिलों से आए बाल वैज्ञानिकों द्वारा कुल १०७ शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। इन शोधपत्रों में से सोलह शोधपत्रों का चयन राष्ट्रीय सेमीनार हेतु किया गया। डीएवी छाल से वरिष्ठ वर्ग में आँचल चन्द्रा तथा कनिष्ठ वर्ग में प्रणव तिवारी के शोधपत्र का चयन राष्ट्रीय सेमीनार हेतु किया गया है। सारे छत्तीसगढ़ में डीएवी छाल ही एकमात्र स्कूल रहा जिसके बाल वैज्ञानिकों के शोधपत्र वरिष्ठ एवं कनिष्ठ दोनों वर्गों में राष्ट्रीय स्तर पर चयनित हुए। उल्लेखनीय है कि इन बाल वैज्ञानिकों ने अपना शोध शाला के विज्ञान शिक्षक अजय शर्मा के मार्गदर्शन में पूरा किया। विजेता बाल वैज्ञानिकों को माननीय अजय चन्द्राकर मंत्री छत्तीसगढ़ शासन ने पुरस्कृत किया। ये बाल वैज्ञानिक अब विद्या प्रतिष्ठान इंस्टीट्यूट ऑफ इंफार्मेशन टेक्नालॉजी, बासमती महाराष्ट्र में २७ से ३१ दिसम्बर को आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में अपनी प्रस्तुति देंगे। शाला के प्राचार्य एल.के. पाढ़ी ने बाल वैज्ञानिकों एवं उनके मार्गदर्शक को बधाई दी व आगामी प्रतियोगिता हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित की है।

संवाददाता : प्राचार्य डी.ए.व्ही. छाल (रायगढ़)

अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न

रायपुर । विगत दि. १० दिसम्बर १६ को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर स्थित महर्षि दयानन्द सेवाश्रम के प्रबन्धक श्री लोकनाथ आर्य जी की प्रथम पुत्री रत्न कु. अन्वेषा सिदार माता श्रीमती गोदावरी सिदार को छः माह होने के अवसर पर वैदिक विधान अनुसार **अन्नप्राशन संस्कार** आश्रम की विशाल यज्ञ शाला में किया गया। जिसका ब्रह्मत्व क्षेत्र के जाने-माने वैदिक विद्वान् आचार्य कर्मवीर शास्त्री जी (सम्पादक अग्निदूत मासिक)ने किया, आचार्य जी ने इस अवसर पर अन्न प्राशन के वैज्ञानिक महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस अवसर पर बच्ची को आशीर्वाद देने पं. कांशीनाथ चतुर्वेदी सहित गुरुकुल एवं विद्यालय के छात्र-छात्राएँ, शिक्षक-शिक्षिकाएँ व आर्यसमाज के अधिकारी वर्ग का विशाल जनसमूह उपस्थित रहा। पारिवारिक जन भी काफी मात्रा में मौजूद रहे। प्रीतिभोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

-निज संवाददाता

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

आर्यसमाज सेक्टर 6 के वार्षिकोत्सव पर उपस्थित विद्वत्गण

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर के प्रबंधक श्री लोकनाथ आर्य के प्रथम सुपुत्री कु. अन्वेषा सिदार की
दिनांक 10 दिसम्बर 2016 को सम्पन्न "अन्नप्राशन संस्कार" के अवसर पर उपस्थित आमंत्रित विद्वत्गण एवं आर्यजन

ओ३म्

आमंत्रण

वेद महोत्सव

एवम्

राष्ट्र रक्षा महायज्ञ

शुक्रवार 13 जनवरी 2017 से
रविवार 15 जनवरी 2017 तक

स्थान - पं. देवकीनंदन दीक्षित सभा भवन,
लाल बहादुर शास्त्री स्कूल प्रांगण, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

मुख्य वक्ता

क्रांतिकारी युवा सन्यासी स्वामी संपूर्णानंद जी महाराज
करनाल (हरियाणा)

भजन संगीत
संदीप आर्य
सुविख्यात वैदिक भजनोपदेशक,
पानीपत (हरियाणा)

यज्ञ
पं. जयदेव शास्त्री
पुरोहित, आर्य समाज,
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

कार्यक्रम

शुक्रवार, १३ जनवरी २०१७
प्रातः ८ से १० बजे तक
यज्ञ एवम् प्रसाद
प्रातः १० से १ बजे तक
विशाल शोभा यात्रा, योगासन व्यायाम एवम् शौर्य प्रदर्शन
(लालबहादुर विद्यालय से गोल बाजार, सदर बाजार, देवकीनंदन चौक, प्रताप चौक, रिवर व्यू रोड होते हुये आर्य समाज गोंडपारा बिलासपुर तक)
सायं ५ से ८ तक - भजन संगीत एवम् प्रवचन
विषय - खुशहाल परिवार, समाज एवम् राष्ट्र का निर्माण कैसे हो?

शनिवार, १४ जनवरी २०१७
प्रातः ८ से ११ बजे तक
यज्ञ, भजन संगीत एवम् प्रवचन
विषय - वेदों में राष्ट्रीयता और राष्ट्र भक्ति।
सायं ५ से ८ बजे तक
भजन संगीत एवम् प्रवचन
विषय - धर्म एवम् धर्म निरपेक्षता।

रविवार, १५ जनवरी २०१७
प्रातः ८ से १० बजे तक
यज्ञ पूर्णाहुति एवम् प्रसाद
प्रातः १० से १२.३० बजे तक
भजन संगीत, प्रवचन एवम् समापन
विषय - वेदों में ईश्वर, देवी-देवता, भगवान आदि में क्या अंतर है और किसकी उपासना करनी चाहिए ?
दोपहर १२.३० बजे से
ऋषि लंगर (आर्य समाज गोंडपारा बिलासपुर में)

आयोजक
आर्य समाज
गोंडपारा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) दूरभाष : ०७७५२-२३२१८१
सहयोगी संस्थाएँ
आर्य समाज महिला इकाई, दयानन्द शिक्षण समिति, गोंडपारा, बिलासपुर
आर्य धर्मशाला न्यास, दयानन्द सेवाधाम, अशोक नगर, चाँटीडीह, बिलासपुर
संपर्क सूत्र - ८०८५०५१२६७/८, ९८९३१२१६९४, ९८२६१३०१६३

www.thearyasamaj.org

CHH-HIN/2006/17407 जनवरी 2017 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001